



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

एकांत स्थान में
साधना करने का मूल्य
है, पर भीड़ में रहकर भी
एकांत का-सा अनुभव
करना परम मूल्यवान है।

- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली | वर्ष 25 | अंक 49 | 9 सितम्बर - 15 सितम्बर, 2024 | प्रत्येक सोमवार | प्रकाशन तिथि : 07-09-2024 | पेज 20 | ₹ 10 रुपये



लोकोत्तम महावीर के सक्षम प्रतिनिधि महातपस्वी महाश्रमण की सन्निधि में पर्युषण पर्वाराधना महाशिविर का हुआ शुभारंभ

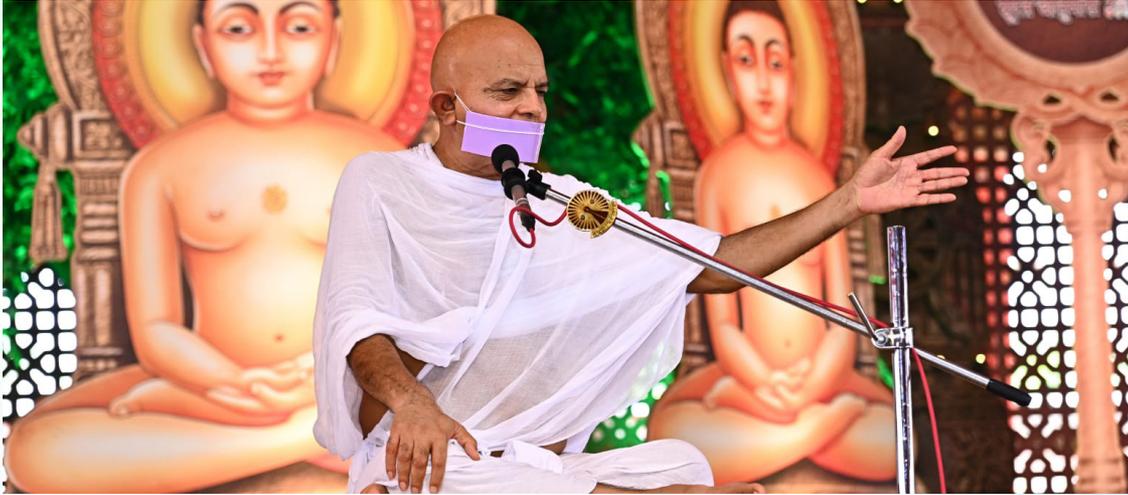
आत्मवाद और कर्मवाद पर प्रकाश
करते हुए साधना की दृष्टि से खाद्य
संयम की दी अभिप्रेरणा

सूरत।

01 सितम्बर, 2024

जैन शासन के प्रमुख पर्व महापर्व पर्वधिराज पर्युषण का डायमंड सिटी सूरत में प्रवासरत श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में भव्य एवं आध्यात्मिक रूप में शुभारंभ हुआ। इस महापर्व पर आचार्य श्री की मंगल देशना सुनने के लिए केवल सूरत ही नहीं देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का आवागमन हुआ है।

वर्तमान युग के महावीर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपनी अमृत देशना फरमाते हुए कहा कि जैन शासन के महानायक भगवान महावीर को लोकोत्तम कहा गया है। जैन शासन में साधना पद्धति, श्रावक-श्राविकाएं, संघ, यह सब भगवान महावीर के शासन



संवत्सरी एकता हेतु
परंपरा का त्याग

गुरुदेव ने फरमाया कि आज चतुर्दशी भी है। शायद यह पहला मौका है, जब पर्युषण महापर्व का प्रारम्भ चतुर्दशी तिथि को हो रहा है। जैन शासन की संवत्सरी की एकता की दृष्टि से हमने परंपरा को छोड़कर आज के दिन पर्युषण महापर्व के प्रारम्भ करने का निर्णय किया है।

के अंतर्गत है। जैन दर्शन आत्मवाद में विश्वास रखता है, इसमें आत्मा और शरीर को भिन्न-भिन्न माना गया है। एक मत में यह दोनों अलग नहीं एक ही हैं, मृत्यु के बाद कुछ नहीं रहता।

दूसरा मत है कि आत्मा अलग, शरीर अलग, जैसे मिट्टी और सोना मिले होने पर भी दोनों का अपना-अपना अस्तित्व है। जैन धर्म में पुनर्जन्म भी मान्य है। जब तक मोक्ष नहीं मिल जाता, तब तक

आत्मा नए-नए जन्म लेती है। पुनर्जन्म के सिद्धांत के साथ जैन दर्शन कर्मवाद से भी जुड़ा हुआ है।

भगवती संवत्सरी से पूर्व के सात दिन अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। यह विशेष साधना का सुंदर उपक्रम है। पर्युषण के दौरान भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा और उनके संदेशों को जानने का प्रयास करते हैं। आज पर्युषण महापर्व के अंतर्गत प्रथम दिन 'खाद्य संयम दिवस'

है। साधना की दृष्टि से खाने पर संयम करना अपने आप में बड़ी बात है। भोजन दो दृष्टि से संयमित किया जाता है- पहला स्वास्थ्य की दृष्टि से और दूसरा साधना की दृष्टि से। आज हमें साधना की दृष्टि से भोजन का संयम करना है। यदि शरीर स्वस्थ रहता है, तो साधना और सेवा कार्य भी अच्छे से संपादित किए जा सकते हैं। व्रत का पालन, विगय वर्जन, और ऊनोदरी अच्छे खाद्य संयम

के उपक्रम हो सकते हैं। चतुर्दशी के दिन हाजरी का क्रम रहता है। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने हाजरी का वाचन करते हुए उपस्थित चारित्रात्माओं को अनेक प्रेरणाएं प्रदान की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने जनता को खाद्य संयम दिवस के पर विशेष प्रेरणा प्रदान करने हुए कहा कि जैन साधना पद्धति के दो महत्वपूर्ण अंग हैं- संवर और निर्जरा। (शेष पेज 17 पर)

शरीर स्वस्थ, चित्त प्रसन्न और मनोबल रहे मजबूत: आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

31 अगस्त, 2024

पूज्यप्रवर आचार्य श्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम का अमृत पान कराते हुए कहा कि खाने-पीने और रहन-सहन में असंयम के कारण अस्वस्थता हो सकती है। यहां तक कि खान-पान में संयम होने पर भी व्यक्ति को तकलीफ हो सकती है। अगर कोई व्यक्ति स्वस्थ है, तो उसे इसका घमंड नहीं करना चाहिए।

यह जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि स्वस्थ रहकर उसका सही उपयोग किया जाए। यदि बीमारी आ जाए, तो मानसिक समाधि कैसे बनी रहे? चित्त प्रसन्न, शांत और मनोबल अच्छा हो, तो हम स्वस्थ रह सकते हैं। बीमारी का आक्रमण होने पर, यदि मनोबल कमजोर

हो, तो अस्वस्थता हावी हो सकती है। मनोबल की कमी से स्वस्थ व्यक्ति भी दुःखी हो सकता है। इसलिए, बीमारी के बावजूद चित्त को शांत और समाधिस्थ रखने का प्रयास करना चाहिए।

चारित्रात्माओं के लिए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि यदि कोई बीमारी हो जाए, तो मनोबल और सहनशक्ति अच्छी होनी चाहिए। बीमार व्यक्ति की निष्कपट भाव से सेवा करना एक उत्तम कार्य है। उनकी रुग्णावस्था में प्रसन्न चित्त और मनोयोग से उनकी सेवा करना, अस्पताल में दिखाना जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि हो सकती है।

आयारो में कहा गया है कि यदि कर्मों का योग और असातावेदनीय का उदय हो, तब भी मनोबल अच्छा रहे और बीमारी में चित्त शांत रहे। बीमारी कार्य

में बाधक न बने। जो कष्ट उदय में आए हैं, उन्हें सहन करने का प्रयास करें और धर्म का लाभ लें।

एलोपैथिक दवाइयों के संदर्भ में आचार्यश्री ने कहा कि दवाइयों की मात्रा और प्रकार का ध्यान रखें। बिना डॉक्टर की सलाह के दवाइयां लेना सही नहीं है। इस प्रकार, बीमारी में भी समता, हिम्मत और मनोबल का भाव बनाए रखें। चारित्रात्माओं को कोई लापरवाही नहीं करनी चाहिए और जागरूक रहना चाहिए, ताकि तकलीफ कम से कम हो। शरीर की स्वस्थता, चित्त की प्रसन्नता और मनोबल मजबूत बने। तन-मन दोनों स्वस्थ और शांत, मजबूत रहें, यही मंगलकामना है।

आचार्य प्रवर ने पर्युषण के दिनों में जप-तप और संयम की धर्मारोधना



करने की प्रेरणा दी। साध्वी रतनश्रीजी (डूंगरगढ़) के देवलोकगमन पर उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए पूज्य प्रवर ने मध्यस्थ भावना स्वरूप चार लोगसस का ध्यान करवाया। स्मृति सभा में साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी, मुख्य मुनि महावीर कुमारजी, मुनि ध्यानमूर्ति जी, साध्वी अखिलयशाजी, साध्वी

मुक्तिश्रीजी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

जयपुर से समागत नवरत्नमल बाफना ने अपनी पुस्तक 'कामधेनु मां रतनाश्री' का आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पण किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

भिक्षु सिद्धांतों के व्याख्याकार थे जयाचार्य : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

30 अगस्त, 2024

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की द्वादशी तिथि। श्रीमद् जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस। पूज्य जयाचार्य के परम्पर पट्टधर, महायोगी आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए कहा कि आचार्यो में कहा है - सब जीवों को जीवन प्रिय होता है। सामान्यतः कोई भी मरना नहीं चाहता। यह हमारी मनोवृत्ति है कि हम जीवन से प्रतिबद्ध रहते हैं। व्यक्ति को सोचना चाहिए कि जैसे मुझे जीवन प्रिय है, वैसे ही अन्य प्राणियों को भी जीवन प्रिय हो सकता है। मैं सभी जीवों को अपने समान समझूँ। ऐसी स्थिति में जितना हिंसा से बच सकता हूँ, उतना बचने का प्रयास करूँ।

जैसे मैं कष्ट नहीं चाहता और सुख चाहता हूँ, वैसे ही दूसरे भी यही चाहते हैं। यह अहिंसा से जुड़ा हुआ सूत्र है कि सबको जीवन प्रिय है। अहिंसा की साधना आत्मा के लिए होती है, ताकि आत्मा पर पाप-कर्म का बंधन न हो। अपनी वजह से दूसरों को कोई कष्ट न हो, इस बात का ध्यान रखना चाहिए। अहिंसा की साधना साधुओं के लिए तो अनिवार्य होती ही है। सर्व-प्राणतिपात व्रत की साधना कितनी बड़ी अहिंसा की बात है। महाव्रतों की आराधना करना अत्यधिक ऊँची बात होती है।

आज भाद्रपद कृष्ण द्वादशी है, जो



जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के चतुर्थ आचार्य श्री जयाचार्य से जुड़ा हुआ दिन है। जयाचार्य के नाम के आगे श्रीमद् शब्द जोड़ा गया है। उनका संयम पर्याय अत्यधिक लंबा था। लगभग 78 वर्षों का उनका जीवनकाल था, जिसमें 68-69 वर्षों का संयम पर्याय रहा। यह उनके जीवन की विशेष संपदा थी। उनमें ज्ञान की जो चेतना थी, वह अद्वितीय थी।

श्रीमद् जयाचार्य ने अनेक आगमों पर राजस्थानी भाषा में जोड़ रचना की थी। भगवती सूत्र की जोड़ तो राजस्थानी भाषा में रचित विशेष ग्रंथ है। रश्म विध्वंसनम् से तेरापंथ दर्शन को समझा जा सकता है। रप्रश्नोत्तर तत्वबोधर और रझीणी चर्चा में कितनी गहरी तत्व-ज्ञान की बातें हैं। और भी अनेक ग्रंथ जयाचार्य

की यशोगाथा गाने वाले हैं। वे एक आगम वेत्ता और तत्वज्ञानी थे। वे भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों के व्याख्याकार थे। अनुशासन और विधि में भी वे अत्यधिक कुशल आचार्य थे। साध्वीप्रमुखा पद की स्थापना जयाचार्य की ही देन थी। वे ही महासती सरदारंजी को मुखिया के रूप में आगे लाए थे, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। उन्होंने संघीयकरण की व्यवस्था भी लागू की थी।

जयाचार्य के समय से धर्म संघ का एक नया रूप बना। तेरापंथ महाग्रंथ का द्वितीय प्रकाशन श्रीमद् जयाचार्य ने किया। व्यवस्थाओं में भी उन्होंने कुछ नवीनीकरण किए। रगणपति सिखावणर उनका एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो आचार्यों के लिए उपयुक्त है। आचार्य श्री तुलसी

ने अपने गीत में लिखा है कि आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित तेरापंथ को जयाचार्य ने संवारा था। जयाचार्य का अपने पूर्वाचार्यों के प्रति भी गहरा सम्मान था।

उनके जीवन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है - अध्यात्म और साधना। जीवन के अंत में उन्होंने विशेष साधनाएं की। विघ्न के समय भी उन्होंने अनेक गीतिकाओं की रचना की थी। युवाचार्य मघवा की उपस्थिति के कारण उन्हें साधना में सुविधा प्राप्त हुई थी।

जयाचार्य का जीवन एक आलोक स्तंभ के रूप में देखा जा सकता है। जयाचार्य ने जो अवदान हमारे धर्म संघ में दिए, वे हमारे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। हम उनके प्रति आभारी हैं कि उन्होंने ऐसी सुदृढ़ व्यवस्था हमें दी।

उन्होंने अनेक ग्रंथ और पंचम आचार्य के रूप में मघवा जैसे संत धर्म संघ को प्रदान किए। यह धर्म संघ का सौभाग्य था कि उसे इतना ज्ञानी और विशिष्ट श्रुतधर व्यक्तित्व प्राप्त हुआ। उन्होंने व्यवस्था को सबल बनाया। पूज्यप्रवर ने रजय हो कल्लु सुत जग मेरे गीत का सुमधुर संगान कराया।

पूज्यवर के केशलोचन के उपलक्ष में चतुर्विध धर्म संघ ने निर्जरा में सहभागी बनने की कामना व्यक्त की, जिस पर पूज्यवर ने साधु-साधवियों को एक घंटा आगम स्वाध्याय तथा श्रावक-श्राविका समाज को सात सामायिक की अलग से प्रेरणा प्रदान की।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि चतुर्थ आचार्य जयाचार्य का जीवन आचार्य भिक्षु के साथ जुड़ा हुआ है। जयाचार्य की जीवनकथा तेरापंथ और प्रज्ञा की जीवनकथा है। आचार्य भिक्षु के साथ उनका तादात्म्य भाव गहरा था। आचार्य भिक्षु को समझने के लिए जयाचार्य को समझना होगा और जयाचार्य को समझने के लिए आचार्य भिक्षु को समझना होगा। जयाचार्य का व्यक्तित्व अत्यधिक प्रभावशाली था। उनका आंतरिक व्यक्तित्व फौलादी था।

मुख्यमुनि महावीरकुमारजी ने श्रीमद् जयाचार्य के प्रति श्रद्धाभाव में सुमधुर गीत रचे गाथा सच्चे योगी की, ये गाथा सिद्ध प्रयोगी कीर का संगान किया।

(शेष पेज 17 पर)

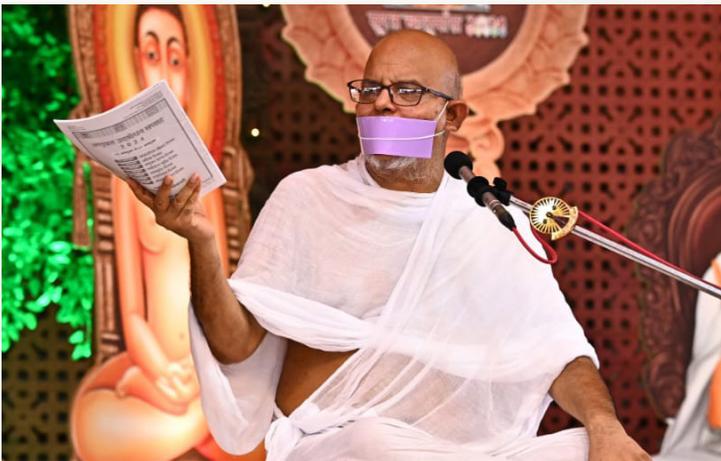
आत्मा के प्रति रहें जागरूक : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

29 अगस्त, 2024

जिनशासन के महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आचार्यो आगम की अमिवर्षा करते हुए कहा कि गृहस्थ परिग्रह से जुड़ा रहता है। परिग्रह में आसक्ति भी हो सकती है। दो चीजें हैं - ध्रुव और अध्रुव। आत्मा ध्रुव है, जबकि स्थूल शरीर और धन-संपत्ति का संयोग अध्रुव है। जो व्यक्ति ध्रुव को छोड़कर अध्रुव की सेवा करता है, उसकी आत्मा, मोक्ष और धर्म नष्ट हो जाते हैं। अध्रुव धन-संपत्ति भी नष्ट हो जाती है।

शरीर और धन-संपत्ति अध्रुव हैं, और मृत्यु हर क्षण निकट आ रही है। जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी होती है। हमें धर्म का संचय करना चाहिए। रोज सामायिक, नवकार मंत्र का जप, तपस्या, ईमानदारी



आदि से धर्म का संचय हो सकता है। पर्युषण पर्व में जितना संभव हो सके, धर्म ध्यान और तप का अभ्यास करना चाहिए। ये आठ दिन धर्म के खाते में आ जाने चाहिए।

समय का कोई भी क्षण असमय नहीं होता, मृत्यु कभी भी आ सकती है। यह

सोचकर कि बाद में धर्म कर लूंगा, बहुत बड़ी भूल है, क्योंकि हमें यह नहीं पता कि हमारे पास कितना समय बचा है। इसलिए अध्रुव चीजों को छोड़ देना चाहिए। जब हम विरक्त हो जाएं, तो प्रव्रज्या की ओर बढ़ना चाहिए। मुमुक्षु जीवन और साधना का क्रम सौभाग्य से प्राप्त होता है।

आध्यात्मिकता से विहीन भौतिकता दुःख का कारण बन सकती है। इसलिए भौतिकता का उपयोग करते समय उसमें आध्यात्मिकता को भी सम्मिलित करें। यदि हम युग के साथ चलें, तो युग भी हमारे साथ चलेगा, लेकिन आध्यात्मिकता को साथ बनाए रखें। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में लागू किए जा सकते हैं। अणुव्रत का कार्य जैन-अजैन सभी के लिए उपयोगी है। अणुव्रत सप्ताह भी अक्टूबर में आ रहा है। अणुव्रत तो हर जगह—चौराहों, बाजारों, और जेलों में भी रहना चाहिए। अणुव्रत व्यापक है, और इसके कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। 75 वर्षों बाद भी अणुव्रत चल रहा है।

मनुष्य को जागरूक रहना चाहिए और धर्म की ओर ध्यान देना चाहिए। आत्मा के प्रति जागरूक रहना चाहिए। आत्म-कल्याण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

बचपन में साधुपन मिलना और उसे सही प्रकार से पालना बहुत बड़ा सौभाग्य है। गार्हस्थ्य जीवन में भी धर्म का अनुसरण किया जा सकता है। बारह व्रत, अणुव्रत और संयम को धारण किया जा सकता है। पर्युषण का सही लाभ उठाना भी मानव जीवन की सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण बात हो सकती है।

'बच्चों का देश' पत्रिका प्रकाशन के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती विशेषांक पूज्य सन्निधि में लोकार्पित किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर एवं संपादक संचय जैन ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया। किशोर मंडल और कन्या मंडल ने चौबीसी के गीतों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।



दृश्य और अदृश्य, सारा संसार कर्म के चक्रव्यूह में फंसा हुआ है

नई दिल्ली।

अग्रवाल मित्र परिषद, तेरापंथ सभा दिल्ली एवं अणुव्रत न्यास के संयुक्त तत्वावधान में जन्माष्टमी के उपलक्ष में साध्वी डॉ. कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में 'कर्मव्यूह' विषय पर एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता राकेश आर्य ने आत्मचिंतन पर जोर देते हुए कहा कि हर मनुष्य बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है।

उन्होंने गीता का सार संक्षेप में बताते हुए कहा कि अनासक्ति और समर्पण, इन दोनों गुणों को आत्मसात कर इंसान महानता के पथ पर बढ़ सकता है। दास

आरोही ने अपनी कविता के माध्यम से श्रीकृष्ण का उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में जन्म लेना सौभाग्य की बात है।

साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा कि दृश्य और अदृश्य, सारा संसार कर्म के चक्रव्यूह में फंसा हुआ है, जिसके कारण अनंत काल से जन्म और मरण की परंपरा कहीं रुकने का नाम नहीं ले रही है। भगवान महावीर ने कहा है कि राग-द्वेषात्मक कषायजन्य प्रवृत्ति उस चक्रव्यूह में फंसने का मुख्य कारण है। साध्वी श्री ने आगे कहा कि यदि इंसान संयममय जीवन जीना सीख ले, तो कर्मों की परतों को हटाया जा सकता है। साथ ही, समताभाव और सरलता ऐसे मानवीय गुण हैं जिनके जरिए

अनंत परंपरा को तोड़कर आत्मा का साक्षात्कार किया जा सकता है।

कर्म बड़े विचित्र होते हैं, पौद्गलिक सत्ता होने पर भी ये चेतना के अस्तित्व को ढककर सत्य मार्ग से विमुख कर सकते हैं। आवश्यकता है कि कर्म की जंजीरों को तोड़कर सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त की जाए।

राकेश वर्मा, पवन सिन्हा, टी. एस. मदान ने अपने अनुभवों को सबके साथ साझा किया और विषय को सरलता से प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया। कवि राजेश चेतन ने कुशलता के साथ कार्यक्रम का सफल संचालन किया, आभार ज्ञापन संजय जैन ने किया।

साधना से सिद्धि एवं सफलता संभव

रायपुर।

श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर के जय समवसरण में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा आयोजित कार्यशाला 'कैसे जानें भाग्य का विज्ञान' में आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकरजी ने कहा कि साधना से सफलता एवं सिद्धि संभव है।

हर व्यक्ति अपने भाग्य का विधाता स्वयं है। अपने उत्थान, पतन, विनाश का वह स्वयं जिम्मेदार है। कर्ता भी वह है भोक्ता भी वह है।

भाग्य विज्ञान को जानने के लिए कर्म विज्ञान को जानना जरूरी है। जगत, प्राणी, समय, ग्रह के अधीन हैं, परंतु ग्रह कर्म के अधीन हैं।

ग्रह कर्म अनुसार ही व्यक्ति को शुभ-अशुभ फल देते हैं। हमें भाग्य विज्ञान पर विचार करने के लिए कर्म

विपाक पर निरंतर चिंतन करना चाहिए। मुनिश्री ने कैसे जाने भाग्य के विज्ञान पर विवेचन करते हुए कहा कर्म की दस अवस्थाओं में संक्रमण नामक अवस्था यह संदेश देती है कि कर्मों को बदला जा सकता है।

मुनिश्री ने राशि, ग्रह, नक्षत्रों की चर्चा करते हुए कहा नमस्कार महामंत्र एवं तीर्थंकर व सिद्धों की स्तुति से भी भाग्योदय संभव है।

मुनि नरेशकुमार जी ने धर्म पर दृढ़ रहने की प्रेरणा दी। कार्यशाला में मंगलाचरण गणेश सुखलेचा, संजय सिंघी, विवेक बैद, अरुण सिपानी द्वारा किया गया। संचालन वीरेंद्र डागा, स्वागत वक्तव्य विकास बरलोटा व आभार ज्ञापन जय चोपड़ा द्वारा किया गया। कार्यशाला में सकल जैन समाज के धर्मानुरागी श्रावक-श्राविका सहभागी बने।

तप अनुमोदना कार्यक्रम आयोजित

पाली।

मुनि सुमतिकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ममता चोपड़ा धर्मपत्नी सूर्य प्रकाश चोपड़ा और पीयूष चोपड़ा पुत्र कवर लाल चोपड़ा के मासखमण के उपलक्ष में तप अनुमोदना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुनिश्री ने तप का अर्थ बताते हुए कहा कि हमें कषायों को दूर करना है। क्रोध, मान, माया, मोह, लोभ इत्यादि कषाय जो दीर्घकाल से हमारी आत्मा में डेरा जमाए बैठे हैं उन्हें दूर करना ही तप है। मुनिश्री ने दो प्रकार के तप

बाह्य और आभ्यंतर तप की व्याख्या की। मुनिश्री ने श्रावक-श्राविकाओं से तपस्या के निमित्त कोई भी आडंबर नहीं करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में शिकार चंद चोरडिया, प्रकाश चंद कांकरिया, महेंद्र चोपड़ा, भीकम लोढ़ा, नरेश मांडोत, सुरेंद्र दुगड़, अरिशिस्ट सुंदेचा आदि ने गीतिका एवं अपने भावों द्वारा तपस्या की अनुमोदना की। संचालन राहुल गोलछा ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में तेरापंथ युवक परिषद् पाली के साथियों, तेरापंथ सभा, महिला मंडल, किशोर मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत समिति ज्ञानशाला का सहयोग प्राप्त हुआ।

कार्डिएक चेकअप कैम्प

अमराईवाड़ी, ओढव। तेरापंथ युवक परिषद्, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा एपिक हॉस्पिटल के सहयोग से निःशुल्क कार्डिएक चेकअप कैम्प का आयोजन सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में किया गया। नमस्कार महामंत्र से कैम्प की शुरुआत की गई। स्वागत वक्तव्य तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने किया।

कैम्प में परिषद् के सहयोग से कार्डिएक चेकअप, विटामिन D3, ब्लड प्रेशर, रैंडम ब्लड शुगर, इसीजी इत्यादि जांच की गई। कैम्प को सफल बनाने में कैम्प संयोजक दिनेश टुकलिया एवं किरण दुगड़ का विशेष श्रम रहा। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सुनिल चिप्पड़ ने किया।

व्यक्ति संकल्प कर ले तो कोई भी कार्य असंभव नहीं

मदनगंज, किशनगढ़।

साध्वी शांताकुमारी जी के सान्निध्य में गौरव कर्णावट की धर्मपत्नी अंशिमा कर्णावट 15 की तपस्या का प्रत्याख्यान हेतु उपस्थित हुईं।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री ने नवकार महामंत्र से किया एवं महिला मंडल की बहनों ने गीतिका का संगान किया। सभा से मानक गेलड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष किरण बोथरा, युवती मंडल ने अपने विचार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी चंद्रावतीजी ने अपने

उद्बोधन में कहा कि अगर व्यक्ति संकल्प कर ले तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है, बस संकल्प करने की देरी है।

साध्वी शांताकुमारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तपस्या एक पर्व है, जिसे घर वाले ही नहीं अपितु पूरा समाज सम्मिलित होकर मनाता है।

तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद्, कन्या मंडल ने अभिनंदन पत्र, साहित्य, आदि भेंट कर तप अभिनंदन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री डॉ. अजय कवाड़ ने किया।

सप्त दिवसीय सीपीएस कार्यशाला एवं दीक्षांत समारोह

सूरत।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, सूरत द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS) कार्यशाला का दीक्षांत समारोह का अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन, सिटीलाइट, सूरत में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि नानालाल राठौड़ (महामंत्री, आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति - सूरत), राष्ट्रीय प्रशिक्षक महावीर भटेवरा,

विशिष्ट अतिथि अमित सेठिया (संगठन मंत्री, अभातेयुप), कुलदीप कोठारी (शाखा प्रभारी, सूरत), अभातेयुप परिवार की गरिमामय उपस्थिति रही। सीपीएस प्रशिक्षक के रूप में महावीर भटेवरा, नूतन लोढ़ा, आकाश शाह ने अलग-अलग दिन अपना प्रशिक्षण प्रदान किया।

तेरापंथ युवक परिषद्, सूरत अध्यक्ष अभिनंदन गादिया द्वारा वक्तव्य दिया गया। सीपीएस कार्यशाला के 26 सम्भागियों ने विभिन्न विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन मंत्री सौरभ पटावरी द्वारा किया गया।

मासखमण तपस्वी अभिनंदन समारोह आयोजित

रायपुर।

रायपुर स्थित श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर के जय समवसरण में मुनि सुधाकर कुमार जी की प्रेरणा से रायपुर तेरापंथ समाज में पहली बार एक साथ 4 तपस्वियों ने मासखमण की तपस्या को अंगीकार किया।

विशेष बात यह थी कि एक तपस्वी 11 वर्षीय धृति दुगड़ और दूसरी ओर 75 वर्षीय जय कुमार जैन तो एक ओर सास-बहू की जोड़ी अनिता नाहर व पायल नाहर।

अभिनंदन समारोह से पूर्व तेरापंथ

युवक परिषद्, रायपुर के संयोजन में भव्य तपस्वी जूलूस समाज की गरिमामय उपस्थिति में निकाला गया, तत्पश्चात जूलूस अभिनंदन समारोह में परिणत हुआ।

मुनि नरेश कुमार जी ने तपस्वियों का मनोबल बढ़ाते हुए गीतिका के संगान से वातावरण को तपमय बना दिया। मुनि सुधाकर जी ने फरमाया कि संभवतः यह पहला अवसर देखने को मिल रहा है कि सभी मासखमण आराधक तपस्वियों ने समभाव व समता के साथ अपनी तपस्या गतिमान की।

मुनिश्री ने सभी तपस्वियों के

आत्मबल को और प्रभावी करते हुए एक-एक तपस्वी की तपस्या का अनुमोदन करते हुए परिवार के सहयोग को भी सराहा क्योंकि परिवार के सहयोग के बिना इतनी बड़ी तपस्या कर पाना संभव नहीं है।

अभिनंदन समारोह में सभी तपस्वियों के परिजनो ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम व तेरापंथ कन्या मंडल ने भी अपनी अभिव्यक्ति/प्रस्तुति के माध्यम से तपस्या का अनुमोदन किया।



मासखमण तप अभिनन्दन समारोह

कादिवली (मुंबई)।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से मालाड निवासी सुरेश धींग की धर्मपत्नी भगवती देवी ने मासखमण तप पूर्ण किया। मासखमण की सानन्द संपन्नता पर आयोजित मासखमण तप अभिनन्दन कार्यक्रम में साध्वी श्री ने कहा- जैन परम्परा में तपस्या को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। दृढ़ संकल्पशील व्यक्ति ही तप के कठिन-पथ पर गतिमान रह सकता है। तप के साथ ज्ञान, जप, ध्यान और स्वाध्याय की साधना की जाती है तो वह और विशिष्ट बन जाता है। बाह्य तप का आराधन व्यक्ति प्रबल आत्मबल से पूर्ण कर लेता है, पर अपने कषायों

दृढ़ संकल्पशील व्यक्ति ही तप के कठिन-पथ पर गतिमान रह सकता है

को उपशांत करना भी बड़ा तप है। साध्वीश्री ने कहा- हमने देखा भगवती धींग ने सहजता के साथ तप की साधना की है, पूरे परिवार का तप में सहयोग रहा। आज मन का संकल्प सिद्ध हो रहा है। इस अवसर पर साध्वीश्री द्वारा 'तप का अभिनन्दन तप से हो' इस आह्वान पर अनेक भाई-बहनों ने तप करने का संकल्प लिया।

साध्वीवृंद द्वारा भिक्षु अष्टकम से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष विभा श्रीश्रीमाल ने

शुभकामनाएं दीं। तेरापंथ युवक परिषद कादिवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने तप-अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। तेरापंथ युवक परिषद मलाड के अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा ने तपस्विनी बहन का परिचय प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा मलाड के सहमंत्री मुकेश कोठारी ने तप का अनुमोदन करते हुए साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन किया। वर्धापना में मांगीलाल धींग, चेतना कच्छारा ने तप अनुमोदना स्वर व्यक्त किया।

तेरापंथ महिला मंडल मलाड ने सामूहिक संगान किया। पारिवारिक जन ने भावना व्यक्त की। साध्वी वृंद ने 'तप-कव्वाली' प्रस्तुत की। मंच संचालन साध्वी शौर्यप्रभा ने किया।

संगोष्ठी का आयोजन

डोंबिवली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में डोंबिवली सभा भवन में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ के नवमाचार्य श्री तुलसी ने व्यक्ति सुधार के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। व्यक्ति सुधार से परिवार, समाज, देश और विश्व सुधार का सपना साकार हो सकता है।

इस अभियान को लेकर आचार्य श्री महाश्रमण जी ने देश-विदेश की यात्राएं की। कुछ मात्रा में मैं भी सहभागी रहा और देखा कि गुरुदेव द्वारा प्रदत्त त्रि-सूत्र सद्भावना, नैतिकता और नशा मुक्ति के अभियान से काफी लोग जुड़े। इसमें उनका ही नहीं, उनके परिवार और समाज का भी हित निहित है। मुनिश्री ने आगे कहा कि हमारा लक्ष्य है कि इंसान इंसान बने, ताकि वह मनुष्य जन्म को

सफल और सार्थक कर सके। मुनि श्री के आह्वान पर उपस्थित कार्यकर्ताओं ने सहर्ष तीनों संकल्पों को स्वीकार किया। कार्यक्रम में उपस्थित महाराष्ट्र राज्य के कैबिनेट मंत्री नामदार रविंद्र चव्हाण ने अपने वक्तव्य में कहा- 'मैं राजनीति में रहते हुए भी पूर्ण व्यसन मुक्त हूँ और मैं भी सबको व्यसन मुक्ति की बात कह सकता हूँ। यह हमारा सौभाग्य है, पुण्योदय है कि आज हम संत चरणों में पहुंचे हैं।'

कार्यक्रम का प्रारंभ मुनि श्री के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात सुरेश बैद, संजय खाय्या ने अणुव्रत गीत से मंगलाचरण किया। सभा अध्यक्ष दलपत इंदोदिया, युवक परिषद अध्यक्ष भगवतीलाल कच्छारा ने मंगल भावना यंत्र और जैन पट्ट से मंत्री चव्हाण का स्वागत किया। कुशल संचालन अणुविभा सहमंत्री मनोज सिंघवी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में भरत कोठारी व राजेंद्र कच्छारा का भरपूर सहयोग रहा।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

इचलकरंजी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्वारा शासनश्री साध्वी कंचन प्रभा जी ठाणा 5 के सान्निध्य में चित्त समाधि शिविर का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से की गई।

साध्वी निर्भयप्रभा जी ने मंगल भावनाओं के साथ कार्यशाला का आगाज किया, साध्वी चेलनाश्री जी ने नमस्कार महामंत्र का संगान कर चित्त समाधि का अभ्यास करवाया। प्रेक्षा प्रशिक्षक विकास सुराणा ने ध्यान और समताल श्वास प्रेक्षा का अभ्यास कराया।

साध्वी मंजूरेखा जी ने सास-बहू के बीच चित्त समाधि बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया। साध्वी कंचन प्रभा जी ने स्वास्थ्य और चित्त शुद्धि पर ध्यान देने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। शिविर में लगभग 100 सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन और आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्षा शिल्पा बाफना ने किया।

40वें स्थापना दिवस पर चित्त समाधि शिविर का आयोजन

हैदराबाद। तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद की स्थापना के 40 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में मंडल द्वारा चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया गया। 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में डी. वी. कॉलोनी तेरापंथ भवन में आयोजित शिविर और महिला मंडल स्थापना दिवस विषय पर मंडल की बहनों ने सुंदर गीतिका का संगान किया। स्थानीय मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा ने अपने स्वागत भाषण में हैदराबाद महिला मंडल स्थापना दिवस की सभी को बधाई दी। साध्वी अमितरेखा जी ने "कैसे पाएं आत्मा का वास्तविक आनंद", व साध्वी रत्नप्रभा जी ने अहम की ध्वनि के लाभ बतलाए और मंगल भावना को अर्थ सहित उच्चारण करवाया। साध्वी अहमप्रभा जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा प्ररूपित प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान पर प्रकाश डाला। मंडल के पूर्व अध्यक्षाओं के सम्मान में मंडल द्वारा नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसमें प्रियदर्शनी भुतोडिया, विनू नाहटा, प्रियंका बाफना और पिंकी दूगड़ द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई। 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी ने 'जीवन का उत्तरार्ध - कैसे बन खुशहाल' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन सुशीला मोदी ने किया। कार्यक्रम की संयोजिका रेनु बैंगानी और पायल पारख थी। कार्यक्रम में लगभग 200 लोगों की उपस्थिति रही।

मासखमण तप अनुमोदना कार्यक्रम

पीतमपुरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में खिलौनी देवी धर्मशाला में मासखमण तप साधिका फूलदेवी विनायकिया के मासखमण तप अनुमोदना का भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ।

साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा जैन धर्म में तपस्या को सर्वोपरि महत्व मिला है। हर धर्म दर्शन में तप के गौरव को व्याख्यायित किया है, पर भगवान महावीर ने तो कहा है कि तप के द्वार तपस्वी करोड़ों भवों के कर्म को नष्ट कर सकता है। तप छोटा सा शब्द है किन्तु अर्थ की दृष्टि से विराट है। त का मतलब है तत्काल और प का अर्थ है पाप को नष्ट करना। जो तत्काल पाप रूपी पंक को नष्ट करता है, वह तप कहलाता है। फूलदेवी विनायकिया ने मासखमण

तप के द्वारा आत्मा को कुंदन बनाने का प्रयत्न किया है।

साध्वी वृंद ने भावपूर्ण गीत के द्वारा मासखमण की अनुमोदना की। साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन सभा मंत्री विरेन्द्र जैन ने किया। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुव्रत समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष मनोज बरमेचा, तेयुप पीतमपुरा के संयोजक विशाल पगारिया, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु सेठिया, तपस्विनी पुत्र अशोक विनायकिया, अंकिता लुणिया ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। परिवार की बहनों, भिक्षु भक्त मंडल ने गीत के द्वारा अनुमोदना की। ममता संचेती ने मंगल संगान किया। ललित जैन ने अभिनन्दन पत्र का वाचन एवं गीत की प्रस्तुति दी। सभा की ओर से तपस्विनी बहन का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने किया।

अणुव्रत आचार संहिता पर आधारित अणुव्रत की गूंज

अहमदाबाद।

सरदार वल्लभभाई पटेल स्मारक, शाहीबाग, अहमदाबाद में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साबरमती गुरुकुल के ज्ञानार्थियों द्वारा म्युजिकल साधनों के साथ अणुव्रत गीत की प्रस्तुति से हुई।

अणुव्रत समिति अध्यक्ष अहमदाबाद प्रकाश धींग ने स्वागत वक्तव्य दिया।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अध्यक्षीय वक्तव्य में अपने विचार साझा किए।

अहमदाबाद की मेयर प्रतिभाबेन जैन ने अपने भाषण में अणुव्रत के कार्यों की सराहना की। अहमदाबाद के विभिन्न क्षेत्रों से आए 250 संभागियों ने अणुव्रत आचार संहिता के 11 नियमों पर संदेशात्मक प्रस्तुतियां दीं, जिन्हें उपस्थित लोगों ने खूब सराहा। इसके साथ ही, सोशियल मीडिया पर आधारित अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्सर

और अणुव्रत आधारित गीतिका की विशेष प्रस्तुति भी दी गई। विशेष अतिथि विजय कोठारी, डॉक्टर महावीर गोलछा, और अन्य प्रायोजक परिवारों का मोमेंटो और दुपट्टे से स्वागत किया गया। सर्वधर्म की उपस्थिति ने कार्यक्रम की प्रेरणादायकता को बढ़ाया और अणुव्रत के संकल्पों से प्रेरित किया।

कार्यक्रम का सफल संयोजन लाड बाफना और वर्षा लुणिया ने किया, जबकि आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सुरेंद्र लुणिया ने किया।



तेरापंथ टाइम्स/युवाट्टि
/इंजिनियस युवा की
प्रति प्राप्त करने के लिए
स्कैन करें।



संक्षिप्त खबर

समृद्ध राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत संस्कार शाला का आयोजन

गुवाहाटी। अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गुवाहाटी द्वारा समृद्ध राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत संस्कार शाला का प्रथम चरण श्री दिगंबर जैन विद्यालय में किया गया जिसमें स्कूल के 100 बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व मंगलाचरण के साथ हुई। अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा ने सभी का स्वागत किया। अरुणा बैद ने महाप्राण ध्वनि और उसके साथ एकाग्रता बढ़ाने के लिए बच्चों को सहज व्यायाम व योग मुद्रा का प्रयोग करवाया। संयोजिका पूजा मणोत ने पॉजिटिव एफर्मेशन करवाया। मीना बैद ने कार्यशाला के विषय अनुरूप एक कहानी के माध्यम से बच्चों को सरल तरीके से समझाया व क्रोध को शांत करने के छोटे-छोटे टिप्स बताए। धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका सुमन मालू ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री ममता दुगड़ ने किया।

मासखमण तप अभिनन्दन समारोह

हरियुर, कर्नाटक। साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मासखमण के उपलक्ष्य में तप अनुमोदना और अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि भैक्षव गण की नींव त्याग और तप पर आधारित है। तपस्या आत्मा को स्वर्ण समान निखारने वाली अग्नि है। तपस्या से आत्मा की शुद्धि होती है और करोड़ों भवों के संचित कर्म नष्ट होते हैं। साध्वी वृन्द ने गीतिका के माध्यम से तपस्वी बहन का उत्साहवर्धन किया। तप अनुमोदना में सभाध्यक्ष जयंतिलाल चौपड़ा, मंत्री देवराज चौपड़ा, और परिवार के अन्य सदस्यों ने विविध भारती के द्वारा भाग लिया। महिला मंडल ने सुमधुर गीतिका और रत्याग का कल्पवृक्ष भेंट किया। साध्वी आत्मयशशाजी ने साध्वी प्रमुखाश्री जी के अमृतपाथेय का वाचन करते हुए सभी को तप में आगे बढ़ने का आह्वान किया। सभा द्वारा तपस्वी सीमा चौपड़ा का अभिनन्दन किया गया, जिसमें संजना चौपड़ा, संतोष बाफना, मीनाक्षी गणधर चौपड़ा, संगीता चौपड़ा और छवि चौपड़ा ने विशेष संकल्प से स्वागत किया।

चित समाधि शिविर का आयोजन

आमेट। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार, आमेट महिला मंडल द्वारा तेरापंथ सभा भवन में साध्वी विशद प्रज्ञा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में चित समाधि शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और मंगलाचरण से हुई। साध्वी मननयशा जी ने चित समाधि का महत्व समझाते हुए जीवन में शांति और सादगी के संकल्प लेने पर जोर दिया। साध्वीश्री जी ने मंगल भावना, जप योग और प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। इसके बाद, महिला मंडल की बहनों ने बुजुर्गों की सेवा और धर्म के महत्व पर एक नाटक प्रस्तुत किया। साध्वी मंदारप्रभा जी ने कहा कि बाहरी परिस्थितियों को बदलना संभव नहीं हो तो मन की स्थिति को बदलना चाहिए। साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने वृद्धावस्था में जिम्मेदारियों से मुक्त होकर, मधुर व्यवहार और उपयोगिता सिद्ध करने की सलाह दी। साध्वी प्रशमयशाजी ने उपस्थित लोगों से दलती उग्र में जीवन के परिवर्तन और चित समाधि के रहस्य पर प्रश्न किए, जिनका मार्मिक उत्तर प्राप्त हुआ। आभार अनिता छाजेड़ ने व्यक्त किया और कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री हेमलता भंडारी ने किया।

लिपिड प्रोफाइल एवं थायरॉयड चेकअप कैम्प

रतलाम। 78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद रतलाम द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर में लिपिड प्रोफाइल एवं थायरॉयड चेकअप कैम्प आयोजन किया गया। इस कैम्प में लगभग 177 व्यक्तियों ने अपना परीक्षण करवाया। कैम्प में अभातेयूप सदस्य व अध्यक्ष पुनीत भंडारी, पदाधिकारी, सदस्य, स्टॉफ आदि उपस्थित थे। परिषद द्वारा तेरापंथ भवन रतलाम के प्रांगण में ध्वजारोहण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन

जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ साउथ कोलकाता। मोमासर निवासी - हैदराबाद प्रवासी सुरेखा - स्व. प्रफुल जैन(पटावरी) के सुपौत्र एवं प्रतीक-खुशबू जैन के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से कोलकाता में संस्कारक महेंद्र दुगड़ द्वारा मंत्रोच्चार के साथ संपादित करवाया गया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ रायपुर। रायपुर प्रवासी पूर्व जज गौतम चौरडिया के सुपुत्र डॉ. श्रेणिक चौरडिया के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद, रायपुर के अंतर्गत संस्कारक अनिल दुगड़ व सूर्य प्रकाश बैद ने संपूर्ण मंत्रोच्चार व विधि से संपन्न कराया।

सास-बहू समन्वय कार्यशाला का आयोजन

सरदारशहर।

डॉ. साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में महिला मंडल के तत्वावधान में सास-बहू समन्वय कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वी शुभप्रभाजी ने कहा- सप्ताह में सात दिन होते हैं, आठवां है परिवार। घर को स्वर्ग बनाने के लिए जरूरी है एकता, सह-भावना, सहनशीलता, प्रेम, विश्वास, मर्यादा और

सीमाकरण। परिवार की रीढ़ है सास-बहू। उसमें सास की अहम् भूमिका है। वह घर की बुनियाद है। अगर बहू गृह काम को नहीं जानती तो उसे प्यार से सिखाएं। बहू की इच्छा का सम्मान करें। घर में बहू से प्रत्येक कार्य में सलाह, मशविरा करें। ज्यादा कहा-सुनी हो जाए तो खमतखामणा भी अवश्य करें। बहुएं भी सास को सम्मान दें, उनकी इज्जत करें, हर कार्य पूछकर करें। साध्वी

कान्तयशा जी एवं साध्वी मन्दारयशा जी ने 'सुणल्यो सासुजी' गीत का संगान किया। महिला मण्डल की बहनें- संजू दूगड़, सुनीता कुण्डलिया ने सास-बहू एकट की सुन्दर प्रस्तुति दी। साध्वी अनन्यप्रभा जी ने 'समन्वय की अनुप्रेक्षा' का प्रयोग करवाया। कार्यशाला का प्रारम्भ बहनों ने मंगलाचरण से किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन महिला मंडल मंत्री मनीषा बैद ने किया।

रक्षाबन्धन एवं स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

कांदिवली (मुंबई)।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद कांदिवली द्वारा आयोजित रक्षा बन्धन कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए साध्वी श्री डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- हर व्यक्ति अपने जीवन में स्वतंत्रता चाहता है, परतंत्र रहना कोई नहीं चाहता।

प्राचीन साहित्य में कहा गया है- जो स्ववश में होता है, वह सुखी होता है और जो दूसरों के वशीभूत होता है- वह दुख का अनुभव करता है। आज का दिन भारत के लिए गौरव का दिन है, क्योंकि भारत परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त हुआ, स्वतंत्रता की सांस ली। अपना सब कुछ होते हुए भी भारत ने परायापन का अनुभव किया। स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं है।

साध्वी श्री ने कहा- आवश्यकता है- स्वतंत्रता अभिशाप नहीं, वरदान बने। हर भारतवासी अपने पर अपना अनुशासन करे। विवेक चेतना जागृत करे। भारत तो कुछ समय के लिए परतंत्र बना। अध्यात्म के संदर्भ में विचार करें तो हमें असली आजादी का अनुभव

करना चाहिए, वह है हमारी आत्मा की स्वतंत्रता। हमारी आत्मा अनन्त काल से कर्मों के कारण परिभ्रमण कर रही है। कर्मों की जंजीर से जकड़ी है। उसे मुक्त करने का प्रयास करें, यह सही अर्थ में स्वतंत्रता है।

मनुष्य का जन्म मिला, उसका सदुपयोग करे संगठनात्मक चेतना जागे। कहा गया है 'संधे शक्ति कलौ युगे' कलियुग में सबसे बड़ी शक्ति है- एकता की। शक्ति का सही उपयोग करने वाला समाज के लिए हितकारी होता है। आत्मानुशासित व्यक्तियों का समूह ही स्वस्थ समाज की संरचना कर सकता है। कांदिवली महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुलयशा जी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित 'शुभ संकल्प संजाए' गीत का संगान किया।

किशोर मंडल एवं कन्या मंडल ने 'अन्त्याक्षरी संगान राष्ट्र के नाम' कार्यक्रम प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'हम स्वतंत्र भारत के यात्री' कार्यक्रम की मोहक प्रस्तुति दी।

जैन संस्कारक शान्तिलाल कोठारी, पारसमल दुगड़ सौरभ दुधोडिया ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबन्धन मनाने की प्रक्रिया प्रस्तुत की। साध्वी अतुलयशा जी ने कहा- स्वच्छंदता का निरोध करना ही वास्तविक स्वतंत्रता है। मंच संचालन साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने किया। रक्षाबंधन कार्यशाला में श्रावक-श्राविका परिवार की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यशाला आयोजन से पूर्व-तेरापंथ भवन प्रांगण में ध्वजारोहण हुआ, तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने राष्ट्र के प्रति सद्भाव व्यक्त करते हुए स्वर संगान किया।

प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका विमला दुगड़ ने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर तेयुप कांदिवली-मलाड़ ने श्री तुलसी महाप्रज्ञा फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं रंशखनादर समारोह के प्रायोजक मेघराज धाकड़ का सम्मान किया। अंत में तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी एवं मंत्री पंकज कच्छारा ने जैन संस्कारक पारसमल दुगड़, शान्तिलाल कोठारी एवं सौरभ दुधोडिया एवं रक्षाबंधन कार्यशाला के प्रायोजक प्रकाश भेरुलाल बोहरा का आभार ज्ञापित किया।



‘शासनश्री’ साध्वी रतनश्रीजी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

गुण रत्नों की भण्डार – साध्वी रतनश्री

● साध्वी कार्तिकप्रभा ●

‘शासनश्री’ साध्वी रतनश्रीजी मेरे परम उपकारी थे। हम दो महीने के दीक्षित थे, तब गुरुदेव ने महती कृपा कर हम दोनों बहनों को आपको वन्दना करवाई। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें आपकी सन्निधि, आपके चरणों में रहकर साधना करने का अवसर प्राप्त हुआ। लगभग 12 वर्ष बीत गए आपके चरणों में, आपके आंचल में, हम बच्चे की तरह रहते। पता ही नहीं चला जिन्दगी के बारह वर्ष बीत गए। हमसे गलती भी होती तो आप उसे सुधारकर पुनः नहीं दुहराएँ ऐसी प्रेरणा देती रहती। मां जैसे अपने बच्चे को आगे बढ़ाती है, उसी प्रकार आप एक मां की तरह हमारे सर्वांगीण विकास में योगभूत बनीं। आपने हमें बहुत संस्कार दिए। आप हमें हमेशा अपने आचार के प्रति, मर्यादा प्रति सजग करते। आप में गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव था। आप फरमाते – जो अच्छा होता है वह सब गुरु कृपा से होता है और जो बुरा होता है वह अपने प्रमाद से होता है। आप में अनेक गुण थे। मैं कुछ गुणों का वर्णन करना चाहती हूँ :-

गुरु निष्ठा- आपमें अद्भुत गुरु निष्ठा थी। आप बात-बात, प्रवचन-प्रवचन में गुरु के गुण गाती थी। आपको जहां गुरुदेव ने चातुर्मास फरमाया, वहां आप पधारे। आपने चातुर्मास कभी नहीं बदलाया। इसलिए स्वयं गुरुदेव श्री तुलसी ने फरमाया था- रतनश्री को जहां भेजा, वह गयी। यह सब गुरु कृपा और आपके गुरु चरणों में समर्पण की शक्ति थी।

सतत अग्रमत्तता- आप निरन्तर स्वाध्याय में रत रहती थी। ध्यान, जप, तत्व चर्चा आदि में आप संलग्न रहती थी। भगवान महावीर के वचनों को आपने सार्थक किया ‘समयं गोयम! मा पमायए - हे गौतम! तूं क्षण भर भी प्रमाद मत कर। यह आगमवाणी आपके जीवन में चरितार्थ होती थी।

संयम निष्ठा- आपका जीवन बहुत संयमित था। वाणी का संयम था, आप अनावश्यक नहीं बोलते। काय में भी संयम, आप 9 वें दशक में भी बिना सहारे एक आसन में लम्बे समय तक विराजते थे।

आहार संयम- बहुत कम द्रव्यों का आप उपयोग करते थे। आहार में आप प्रायः मौन रहते थे।

मर्यादा और अनुशासन के प्रति पूर्ण सजगता- संथारे की प्रबल भावना - जीवन के अन्तिम वर्षों में मैंने अनुभव किया, आप बहुत बार फरमाते- मुझे संथारा करना है और उस भावना को आपने अपने दृढ़ मनोबल से स्वीकार कर पूर्ण किया।

पूर्व आभास- कुछ समय पूर्व आप बहुधा फरमाते थे कि मेरे जीवन का अब समय ज्यादा नहीं है। मैं पूछती- महाराज! अभी 95 वर्ष तक तो हो ना। वो बोलते- नहीं। आपने अपने दृढ़ मनोबल से अपने सपने को साकार किया।

जीवन का अंतिम पड़ाव- जीवन के अंतिम पड़ाव में आपके फेफड़े में पानी भर गया। उस पीड़ा को आपने बहुत सम भाव से सहन किया, थोड़े समय बाद ही हार्ट में समस्या हुई। थोड़ा समय बीता और अचानक खांसी का प्रकोप बढ़ गया। रात-दिन आप खांसी से जूझ रहे थे और फिर डॉक्टर के परामर्श से चेकअप कराया तो टी. बी. की बिमारी से आप ग्रस्त हो गईं। उसकी दवाई चालू की और समस्या आने लगी। जी घबराना, भूख न लगना, आहार पूरा नहीं कर पाना आदि। फिर भी आपने बहुत समता से सहा और अचानक बहुत तेज बुखार आ गया जिससे आपको हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। आप वहां लगभग 6 दिन रहीं। अन्तिम दिन आपको आई.सी.यू. में भर्ती किया गया। आप उस दिन बहुत बैचेन रही और एक ही बात- नयोडा मुझे यहां से ले जाओ। आपकी प्रबल भावना देखते यह निर्णय किया गया कि अब हमें ठिकाने जाना चाहिए। आप ठिकाने आते ही पहले दिन उपवास और दूसरे दिन यावज्जीवन तिविहार संथारा पचख लिया। उस वेदना में आपने यह निर्णय लिया कि मुझे आध्यात्मिक चिकित्सा करनी है और आपने वीरता का परिचय दिया। महारौली के उस अनुकंपा भवन में जहां शासनमाता ने अन्तिम सांस ली, उसी स्थान पर संथारा पचख कर नया इतिहास रच दिया।

विलक्षण एवं प्रवर्धमान अनशन के प्रति हृदयोद्गार

● साध्वी अणिमाश्री ●

आप सचमुच में तेरापंथ धर्मसंघ के रतन हो। आपश्री ने आमरण अनशन स्वीकार कर संयम रतन की चमक को और अधिक शत गुणित किया है। जीवन के समरांगण में आप महायोद्धा बनकर कर्म रिपुओं को परास्त कर शिवपुर की ओर अग्रसर हैं।

‘शासनश्री’ सतीवरा! नमन आपके धृतिबल को। नमन आपके मनोबल को। नमन आपके आत्मबल को। नमन आपके संकल्प बल को। नमन आपके साहसिक निर्णय को। ‘अप्पाण्वेव जुञ्जाई’ भगवान महावीर के इस उपदेशामृत का पान करके आपने एक वीर योद्धा की तरह आत्म विजय का कवच पहनकर अभ्युदय का मार्ग लिया है। आपकी भावधारा की पवित्रता, परिणामों की उज्ज्वलता के बारे में सुनकर सात्विक आल्हाद की अनुभूति हो रही है। आपकी सजगता प्रणम्य है। आपकी समता विलक्षण है। घोर वेदना के क्षण में चेहरे की आभा और प्रसन्नता के बारे में साध्वी सुधाप्रभा जी एवं साध्वी समत्वशा जी से सुनकर शरीर रोमांचित हो गया। आत्मा के ऊर्ध्वारोहण का पथ प्रशस्त करने वाला आपका यह दीपता अनशन जिनशासन एवं तेरापंथ धर्मसंघ के लिए कीर्ति स्तंभ बनकर अतिशय प्रभावना का हेतु बनेगा।

जन-जन के मानस मंदिर में त्याग का दीप प्रज्वलित करने वाला यह अनशन तेरापंथ की स्वर्णिम ख्यात का गौरवशाली अध्याय बनेगा, ऐसा हमारा चिंतन है। लगता है आपने ‘आत्मा भिन्न शरीर भिन्न’ इस सूत्र को आपने आत्मसात कर लिया है। उत्तरोत्तर प्रवर्धमान अनशन की हार्दिक मंगलकामना।

‘शासनश्री’ साध्वी सुव्रतांजी, ‘शासनश्री’ साध्वी सुमनप्रभाजी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी एवं साध्वी चिंतनप्रभाजी के निरन्तर सहकार एवं सेवाभाव के प्रति हृदय की अतल-अतल गहराईयों से हार्दिक अहोभाव। गुरुदेव शरणमस्तु।

अवसर खाली नहीं गया

● ‘शासनश्री’ मुनि विजय कुमार ●

पुण्यवती साध्वी रतनश्री ने जीवन को धन्य किया, कैसे जीना, कैसे मरना, सबको पाठ पढ़ा दिया।।

गुरु प्रदत्त रत्नों की शोभा, तुमने खूब बढ़ाई है। अनशन करके सतिवर ! तुमने पाई खूब बढ़ाई है।

ढलती उमर में जीवन का अन्तिम सार निकाल लिया।।

तीन मनोरथ पूर्ण हुए सतिवर ! तुमने जीती बाजी।

संत और सतियां दर्शन कर होते थे अतिशय राजी।

जागरूक जीवन सतिवर का अवसर खाली नहीं गया।।

चार बहिन भतीजी के संग गण उपवन में सदा खिली।

संयम के सुरंगे रंग में सतिवर मानो घुली मिली।

गुरुओं की पावन सन्निधि में अमृत रस ज्यों खूब पिया।।

राजधानी में करके अनशन नव इतिहास बनाया है।

जीवन के इस भव्य भवन पर स्वर्णिम कलश चढ़ाया है।

शूरवीरता की प्रतिमा बन उन्नत जीवन ‘विजय’ जिया।।

आओ महिमा गाएं रे...

● साध्वी सुधाप्रभा ●

शासनश्री के अनशन की, आओ महिमा गाएं रे।
चढ़ते भावों से अनशन, सुन हरसाए रे।।

तीसरा मनोरथ हुआ पूरा, देते तुम्हें बधाई हम।
शिवरमणी का वरण करो, मंगल भाव सजाएं हम।
भावों की श्रेणी तेरी बढ़ती जाए रे।।

भारत की राजधानी में, संयमश्री को स्वीकारा।
बहत्तर साल का संयम पर्याय, जीवन तेरा मनहारा।
अनशन भी दिल्ली में, इतिहास रचाए रे।।

शासन मां के अणुओं से, तुमने ऊर्जा पाई है।
यही जगह और यही धरा, महारौली वरदाई है।
शासनश्री के अनशन से, दिल्ली महकाए रे।।

महारौली के प्रांगण में, आई आज दीवाली है।
शासनश्री का सुन अनशन, जन-जन में खुशहाली हो।
साध्वी सुधाप्रभा को, आशीष दिराए रे।।

प्रभावशाली संथारा, गण का रोशन नाम करे।
आत्मतीर्थ की महायात्री, लक्षित मंजिल वरण करे।
करना गण-सेवा निशदिन, संकल्प सजाए रे।।

लय- जीवन है पानी

गुणग्राहकता प्रसंशनीय ही नहीं अनुकरणीय है

● मुनि कमलकुमार ●

‘शासनश्री’ साध्वी श्री रतनश्रीजी विदुषी अनुभवी गुरुभक्ता और मुदुभाषी साध्वी थी। गत वर्ष दिल्ली प्रवास में कई बार मिलने का काम पड़ा। उनकी सरलता, गुणग्राहकता प्रसंशनीय ही नहीं अनुकरणीय है। उन्होंने आचार्यश्री तुलसी से दिल्ली में दीक्षा ग्रहण की और आचार्यश्री तुलसी ने ही उन्हें अग्रगण्य बनाया। उनके द्वारा की गई देश-विदेश की पैदल यात्राएं स्व-पर कल्याणकारी बनीं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी और आचार्य श्री महाश्रमण जी की भी उनपर विशेष कृपा रही। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने गंगानगर प्रवास में उन्हें ‘शासनश्री’ अलंकरण प्रदान किया। साध्वीश्री की अन्तरंग भावना को देखकर गुरुदेव की आज्ञानुसार सहोदरी ‘शासनश्री’ साध्वी सुव्रताजी ने उच्च मनोबल से संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। उनके संथारे से दिल्ली अध्यात्म साधना केन्द्र स्थान अध्यात्ममय बन गया। दिल्ली के लोगों को लंबे समय तक साध्वीश्री की उपासना सेवा का अवसर मिला, यह भी सौभाग्य का विषय है। हर्ष से साध्वीश्री के शुभ संवाद मिलते रहते थे। दिवंगत आत्मा के उत्तरोत्तर विकास की मंगल कामना। सहयोगी सभी साध्वियों का योग उनकी चित्त समाधि में सहयोगी बना इसकी प्रसन्नता है।



‘शासनश्री’ साध्वी रतनश्रीजी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

जीवन धन्य बनाया

● 'शासनश्री' साध्वी सुव्रता ●

रतनश्री जी नाम तुम्हारा सार्थकता को पाया।
जीवन धन्य बनाया।।

संयम के सुन्दर रत्नों से भूषित तेरी काया।
राजधानी में दीक्षा लेकर नव इतिहास बनाया।
तुलसी गुरु के कर कमलों से संयम धन को पाया।।
श्री डूंगरगढ़ की पुण्य धरा पर तुमने जन्म लिया था।
चौरडिया कुल को चमकाया अद्भुत काम किया था।
तीनों भगिनी और भतीजी ने भी साथ निभाया।।
देश-विदेशों की यात्रा कर शासन शान बढ़ाई।
चारित्रिक निर्मलता तेरी सबको खूब सुहाई।
ओजस्वी वाणी सुन तेरी जन-जन मन हर्षाया।।
बात बात प्रवचन-प्रवचन में गुरु की गरिमा गाती।
प्राण-त्राण गुरुदेव शरण हैं यह संस्कार जगाती।
शासन निष्ठा तेरी गहरी महाश्रमण सिर छाया।।
अनशन की यह छटा निराली महारौली में छाई।
अनुकम्पा का भवन सुहाना अनशन जोत जलाई।
राजधानी में रंग लगा है शक्ति स्रोत जगाया।।

लय - संयममय जीवन हो

बनाया जीवन को गुलजार

● 'शासन गौरव' साध्वी कल्पलता ●

बनाया जीवन को गुलजार।
शासनश्री साध्वी रतनश्री धन्य धन्य सौ बार।।
श्री डूंगरगढ़ का चौरडिया कुल नामी संस्कारी,
तुलसी प्रभु की अनुकंपा से संयम निधि स्वीकारी।
तीन अनुजा एक भतीजी अनुगामी सहकार।।
यात्राओं से गण प्रभावना निज पर उपकार साधा,
सहज सरल जीवन की पोथी, आत्मा को आराधा।
संयम पथ पर कदम बढ़ाया गुरु दृष्टि अनुसार।।
जीवन के दसवें दशक में हृद हिम्मत दिखलाई,
घोर वेदना तन में किन्तु मन में शान्ति समाई।
समता रस में अवगाहन कर अनशन से उद्धार।।
भारत की रजधानी दिल्ली धरा बणी कल्याणी,
जयप्रभा जी, कुलबाला जी की राहें सहनाणी।
शासन माता का वात्सल्य पीठ सदा सुखकार।।
खान-पान तजना अति दुष्कर जग में सतिवरा जी,
बढ़ते-चढ़ते परिणामों पर टिकी हुई है बाजी।
आत्मा से आत्मा का दर्शन करे भवों से पार।।
महाश्रमण की कृपा शुभंकर खुले मुक्ति के द्वार।।

लय - धर्म की लौ जलाएं हम

ऊंची राखिज्यो भावां री श्रेणी चढ़ती

● 'शासनगौरव' साध्वी राजीमती ●

ऊंची राखिज्यो भावां री थे श्रेणी चढ़ती।
अन्तर झांकिज्यो जिण स्यूं रहसी श्रेणी बढ़ती।।
घण्टां बरस साधुपण पाल्यो, करता धर्म प्रचार।
अब निर्मल परिणाम राखिज्यो, आराधक पद सार।।
हाड़ मांस री पुतली आ, है मानव री देह।
जड़ चेतन रो भेद समझकर, मत करज्यो थे नेह।।
शारीरिक यदि वेदनावां, बढ़ ज्यावै भरपूर।
तो पिण मजबूती राखिज्यो, बण कर समता शूर।।
भूल चूक जो महाव्रतां में, लाग्यो हुवै अतिचार।
तो निश्चल आलोचना कर, हो ज्यावो तैयार।।
जैन धर्म भैक्षव शासन ओ, महाश्रमण सिर हाथ।
देव गुरु री आसथा आ, ले जाज्यो थे साथ।।
संत, सती भाया बायां स्यूं, खमत खामणा सार।
सुखे सुखे जल्दी पाइज्यो, भव सागर स्यूं पार।।

मानो फैली रत्नप्रभा

● साध्वी कर्णिकाश्री, साध्वी मैत्रीप्रभा ●

शासनश्री सति रतनश्रीजी, जीवन धन्य बनाया है।
चढ़ते भावों से संथारा, जीवन को चमकाया है।।
नाम रतन है काम रतन सा, रतन सरीखी है आभा।
चेहरे पर है चमक रतन सी, मानो फैली रत्नप्रभा।
संयम रत्नों की आभा से, जीवन सफल बनाया है।।
शासन श्री सतिवर जी तेरा, जीवनन है यह वरदाई।
खूब किया है काम संघ का, गूज रही यश-शहनाई।
कर यात्राएं सतिवर तुमने, गण का मान बढ़ाया है।।
दिल्ली में दीक्षा अनशन भी, दिल्ली में स्वीकार किया।
शासन माता की भूमि पर, तुमने काम कमाल किया।
देख तुम्हारा अद्भुत साहस, जन-जन मन हरसाया है।।
शासनश्री सति सुव्रताश्री जी, तन की छाया बन रहती।
भतीजी शासनश्री सुमनप्रभाजी तन-मन से सेवा करती।
चिन्तन-कार्तिक दोनों ने ही पाया तेरा साया है।
शासनश्री ने शासनश्री को संथारा पचखाया है।।
साध्वी अणिमा वर्ग समूचा, अनशन की महिमा गाए।
दो ऐसा आशीर्वर गण का, जस झंडा हम फहराए।
खमतखामणा करते हम सब, पाया स्नेह सवाया है।।
दिव्य लोक से गण की सेवा, करते रहना तुम सतिवर।
गण का कर्ज चुकाना अब तुम, गण ही है यह श्रेयस्कर।
गुरुवर महाश्रमण ऊर्जा से ऐसा अवसर पाया है।।

अनशन की महिमा गाएं

● साध्वी समत्वयशा ●

जय जय जय सति रतनश्री जी, शासनश्री कहलाए।
अनशन की महिमा गाएं।।
शासन मां की पुण्यधरा पर, जागी है पुण्यई।
संथारा कर सतिवर तुमने, गण में ख्यात बनाई।
प्राणवान संकल्प तुम्हारा, हम बलिहारी जाएं।।
गिरीगढ़ का चौरडिया परिकर, सचमुच में सौभगी।
पाँच रत्न बहराए गण में, कुल की किस्मत जागी।
पहली रतन हो सतिवर तुम तो, चार रतन फिर आए।
शासनश्री जय, कुल भगिनी को, संथारा करवाया।
छोटी बहना ने अब तुमको, संथारा पचखाया।
खूब दीपावो जिनशासन को मंगल भाव सुनाएं।।
दो ऐसा आशीर्वर हमको, गण सम्मान बढ़ाएं।
साढ़े तीन करोड़ रूवाली, गण कीरत फैलाए।
आयरियं शरणं गच्छामि का, नाद सदा गुंजाए।।

लय - जहां डाल-डाल पर

साधना आराधना से शिव सुख अविचल पाया

● डॉ. साध्वी परमयशा आदि साध्वी वृंद ●

भिक्षु गण के नीलगगन में, इन्द्रधनुष लहराया।
श्री डूंगरगढ़ की लाडली से तेरापंथ हरसाया।।
देव गुरु धर्म श्रद्धा से, जीवन धन्य बनाया।
भिक्षु शासन के गौरव को, शिखरों सदा चढ़ाया।
आगम बत्तीसी वाचन से, नव इतिहास रचाया।।
जिनकी प्रवचन पट्टा से यह, नंदनवन मुसकाया।
प्रियभाषी मृदुभाषी का, आकर्षण सदा सुहाया।
साधना आराधना से, शिव सुख अविचल पाया।।

सेवा निष्ठा गण की सौरभ से, कण-2 बन गया पावन।
गुरु निष्ठा गण निष्ठा से, महकाया जीवन गुलशन।
संस्कारों से व्यवहारों से, भारी सुयश कमाया।।

शासन मंदिर शासन पूजा, जिनशासन मन की धड़कान।
शासन की पूजा वेदी पर, तन मन प्राण किए अर्पण।
अद्भुत अभिनव मनस्विनी ने, सूरज नया उगाया।।

प्राणकोष में नवपद पावन, सफलता की कुंजी।
ध्यानयोग से साम्ययोग से पायी अद्भुत महापुंजी।
आत्मबल से मनोबल से, सुयश शंख बजाया।।

लय - जनम जनम

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है।
माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां
आत्मशुद्ध है, विश्वास भी है।

- आचार्य श्री महाश्रमण



‘शासनश्री’ साध्वी रतनश्रीजी की स्मृति में चारित्रात्माओं के उद्गार

लिया है संधारा स्वीकार

● ‘शासनश्री’ मुनि विमलकुमार ●

लिया है संधारा स्वीकार।

शासनश्री सती रतनश्री जी ने किया बहुत उपकार।।

रत्न चतुष्टय सम दीक्षित हैं चारों बहनें गण में,
तीनों बहनों के संधारे भिक्षु वन उपवन में।
एक बहन ने करवाया संधारा हिम्मत धार ।।

आर्य तुलसी से महाश्रमण तक सेवा गण में साजी,
साध्वीश्री का संयम जीवन करता सबको राजी।
बाजी जीती जीवन का है अन्तर्मन गुलजार ।।

धाम प्रमुखाश्री जी का वात्सल्य पीठ यह दिल्ली,
श्रावक समाज भी धन्य हुआ साक्षी महरोली दिल्ली।
अक्षय पथ पर विजय वरो, खुला है मुक्ति द्वार ।।

विमल मुनि अरु सहवर्ती संत करे कामना प्रतिपल,
गुण स्थानों की श्रेणी चढ़कर पाओ शिव, सुख मंगल।
मनवांछित सब काम सरे, हम करें मधुर गुंजार ।।

लय - सुगुरु को वंदन शत् शत् बार

नश्वर है जो गात

● मुनि जयदीपकुमार ●

शासनश्री रतनश्री जी ने अद्भुत साहस दिखाया है।

तोल मनोबल अपना दुर्गम पथ अपनाया है।।

श्री डूंगरगढ़ में तुमने है जनम लिया
कुल चौरडिया का नाम रोशन है किया
हूलासमल जी विद्या बाई के-2
मानो घर रत्न आया है-शासनश्री।।

गुरु तुलसी कर से संयम रत्न कर स्वीकार
कर तल स्पर्शी अध्ययन आगम का निकाला सार
विनय समर्पण से गुरु दिल स्थान जमाया है-शासनश्री।।

शासनश्री सुव्रता जी शासनश्री जय कुलबाला
शासनश्री सुमनप्रभा जी अनुपम गुणों की माला
कार्तिक चिन्तन प्रभा जी ने जीवन सेवा में लगाया है-शासनश्री।।

दिल्ली में ही दूसरा जन्म दिल्ली से ही प्रस्थान,
पाने अमृतत्व किया अनशन का अमृत पान
जीवन महके जो गुलशन स्वर्णिम कलश चढ़ाया है-शासनश्री ।।

मुनि अर्हत भरत मुनि की स्वीकारो मंगल कामना
लक्षित मंजिल का वरण करो भाते यही भावना
परदेहिता जयदीप चाहे आशिष सवाया है-शासनश्री।।

❖ इन्द्रियों अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

- आचार्य श्री महाश्रमण

मन मजबूती से स्वीकारा

● साध्वी चिन्तनप्रभा ●

शासनश्री जी ने संधारा, मन मजबूती से स्वीकारा।
रतनश्री जी ने संधारा, मन मजबूती से स्वीकारा।।

अन्तिम मनोरथ पूर्ण किया, सजगता से अनशन लिया।
समभावों में रहकर सतिवर, तोड़ी है कर्मों की कारा।।
बहत्तर वर्षों का संयम जीवन, रहा तेरा है उज्ज्वलतम।
साधुपन शुद्ध पाला तुमने, चरित्र रहा उजला तेरा।।

अनमोल तेरी वो शिक्षाएं, हम जीवन में अपनाएंगे।
उपकार भूल नहीं पाएंगे है आभारी सतिवर तेरा।।
ऋजुता करुणा ममता तेरी, पाप भीरू वत्सलता तेरी।
भावों में तेरे निर्मलता, जंग में होता जयकारा तेरा।।

ममता से प्रीत हटाई है, आत्मा से प्रीत लगाई है।
बड़ी हिम्मत करके सतिवर, ने पचखा है देखो संधारा।।
महरोली अनुकंपा भवन में, देखो अजब नजारा है।
शासन माता वात्सल्य पीठ में पचखा देखो संधारा।।

लय : दुनिया में देव अनेकों हैं

सर्वोत्तम जीने वाले होते विरले

● साध्वी स्वणरेखा आदि साध्वी वृंद ●

सर्वोत्तम जीने वाले होते विरले।
रत्न तीन हैं पास उन्हीं के पल उजले ।।

शासनश्री साध्वीश्री रतनश्री जी मासीजी,
जीवनभर तकदीर सजाई, नेह से भीजी।
कार्यों से पहचान बनाई, संघ तले ।।

लम्बी-लम्बी यात्रा कर जय-विजय सदा पाई,
विवेकशील व्यवहार सभी के लिए है वरदाई।
संतुलित वाणी मन-सारे सपन फले ।।

सहनशीलता और समर्पण जीवन के हैं संग,
श्रम से सदा कहानी रचती, गुरु निष्ठा हर अंग।
खुशमिजाजी आशावादी सदा चले ।।

जीवनभर की पुण्याई से संधारा पाया,
गुरुदेव की शुभ दृष्टि से, तप का रंग छाया।
करो आत्मलोचन कर शुद्धि ज्योति जले।।

लय : दुल्हे का सेहरा रचा

जीवन धन्य बण्यो गुलजार

● साध्वी संगीतश्री ●

जीवन धन्य बण्यो गुलजार, सतिवर रतनश्री।
पायो साचो शिवपुर द्वार सतिवर रतनश्री।।

भैक्षव शासन ओ सुखदायो, गुरु तुलसी स्यूं संयम पायो।
महाप्रज्ञ स्यूं शक्ति पाई, रतनश्री।।

पिता हुलासमलजी घर थे आया, माता विद्या रै मन भाया।
चोरडिया कुल चमकायो, सतिवर रतनश्री।।

छोटी वय में संयम पायो, तेरापथ रो सुयश बढ़ायो।
थारी गांवा गुण गरिमा, सतिवर रतनश्री।।

चेतन तन ने न्यारो समझो, पाणी भोजन खारो लाग्यो।
पचख्यो संधारो सुखकार, सतिवर रतनश्री।।

गुरु महाश्रमण स्यूं संबल पायो, मन ने थे मजबूत बणायो।
शूरवीरता दिखाई, सतिवर रतनश्री।।

म्हारै जीवन में साहस भरज्यो, स्वर्ग में भी मत भूलिज्यो।
संगीत, कमल बलिहारी जावै, सतिवर रतनश्री।।

शांति, मुदिता बलिहारी जावै, सतिवर रतनश्री।।

तर्ज-म्हारी नैय्या खेवण

उपशम रस की बहती धारा

● साध्वी कनकश्री, लाडनूं ●

उपशम रस की बहती धारा,

वर्धमान परिणाम, सजगतापूर्वक अद्भुत संधारा।
शासनश्री का अतुल आत्मबल विस्मित है परिसर सारा।।

नाम 'रत्न' चारित्ररत्न को खूब तराशा जीवन भर,
संघ भक्ति, संकल्प शक्ति से सतत मथा श्रुत रत्नाकर।
संयम जीवन सदा निखारा, निष्ठा पंचक के द्वारा।।

श्रद्धा विनय समर्पण से गुरुवर त्रय की आराधना,
पल-पल सफल बनाया कर स्वाध्याय योग की साधना।
ओजस्वी वाणी से दे संबोध अनेकों को तारा।।

दीर्घकाल से राजधानी दिल्ली में आप प्रवासित हैं,
जागरूक चर्चा से श्रावक समुदय सहज प्रभावित है।
हुआ असातोदय समता से तोड़ी कर्मों की कारा।।

जाग उठा पौरुष गुरुवर आज्ञा से आजीवन अनशन,
देह भाव से ऊपर उठकर करती हरदम आत्म रमण।।

आत्मलीनता वीतरागता का फैला है उजियारा ।।
रहे चमकता नाम आपका अंबर में ज्यों ध्रुवतारा ।।

लय - जागो बहिनो! नवप्रभात

धन-धन शासनश्री रतनश्री

● साध्वी डॉ. कुन्दनरेखा आदि साध्वी वृंद ●

क्यों अनशन थे स्वीकार, अंगीकार,
धन-धन शासनश्री रतनश्री जी।

जीवन रो काढ़यो सार, समता अणपार,
धन-धन शासनश्री रतनश्री जी।
दिल्ली में (हो रही) जय-जयकार, गुंजार।।

थे अनमोल रत्न भैक्षव शासन रा,
चढ़ता परिणामां अनशन धार्या।
करां अनुमोदना शतबार, हजार।।

मिलन सारिता थारी न्यारी, ऋजुता मृदुता है मनहारी।
थारो मधुर मधुर व्यवहार, सद्गुण भंडार।।

कर्मा स्यूं संग्राम करण नै, भवसागर स्यूं शीघ्र तरण नै।
छोटी भगिनी स्यूं पचख्यो संधारो, करणै उद्धार।

साध्वी सुव्रतां जी पचखायो संधारो, कियो काम करार।।

द्वय भगिनी (जय-कुल) नै पचखायो संधारो,
थारो ही उपकार है सारे

अब आप होग्या तैयार, कर मनोरथ साकार ।।

धीर गंभीर साध्वी सुव्रतांजी, भतीजी सुमनप्रभा जी
लाडेसर कार्तिक चिंतन में भरया, संस्कार उपकार।।

गुरु तुलसी संयम रा दाता, महाप्रज्ञ जीवन-निर्माता।

प्रभु महाश्रमण खेवणहार, तारणहार।।

लय - चाहे बिकज्यां हरो रुमाल



78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह पर विविध आयोजन

लाडनू

स्वाधीनता दिवस पर हमें अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में चिंतन करना चाहिए। भारत 2500 वर्ष पूर्व तक इकोनोमिकल, इंटेलेक्चुअल और स्पिरिचुअल पावर था। आज भी दुनिया की बड़ी कम्पनियों के अध्यक्ष भारतीय हैं। हमें गर्व होना चाहिए कि टैलेंट हंट के लिए कम्पनियां भारत आती हैं। दुनिया की बड़ी कम्पनियों में भारतीयों का निवेश है। उपरोक्त विचार जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने विश्वविद्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में रखे। उन्होंने कहा कि 19वीं सदी मैकाले की थी, 20वीं मार्क्स की और 21वीं सदी भारत की रहेगी। हम किसी देश को मिलाने, उसकी सीमाओं पर कब्जा करने में भरोसा नहीं करते, बल्कि सह अस्तित्व पर निर्भर हैं और 'विश्वगुरु' बनना चाहते हैं। कार्यक्रम में कुलपति ने झंडारोहण किया और एनसीसी द्वारा प्रस्तुत परेड की सलामी ली। रजिस्ट्रार डा. अजयपाल कौशिक, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन व प्रो. बीएल जैन मंचस्थ रहे। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों की छात्राओं ने अपनी सुंदर प्रस्तुतियां दी। सुनीता काजला का गीत, कंचन के मारवाड़ी में प्रस्तुत विचार एवं मुमुक्षु प्रियंका व प्रिया शर्मा के गीत को सभी ने सराहा।

आर आर नगर

तेरापंथ महिला मंडल आर आर नगर द्वारा मागड़ी रोड स्थित कनडा इंग्लिश मोडर्न प्राइमरी स्कूल स्थित कन्या सुरक्षा सर्कल में 78वां ध्वजारोहण किया गया। अध्यक्ष सुमन पटावरी ने सभी बच्चों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी। बच्चों द्वारा बहुत ही सुंदर सांस्कृतिक प्रोग्राम की प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात बच्चों को गिफ्ट वितरित किए गए।

बोरावड़

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ सभा भवन के बाहरी परिसर में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। तेरापंथ सभा के वरिष्ठ पदाधिकारियों व मंडल की मंत्री और संरक्षिका द्वारा ध्वजारोहण किया गया। उसके पश्चात राष्ट्रगान का संगान किया गया। महिला मंडल के द्वारा इस अवसर देश भक्ति गीतिका का संगान किया गया। कन्या मंडल की बहनों द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर अपने विचार व्यक्त

किए गए। मनीष जैन ने वक्तव्य के द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया गया।

अमराईवाड़ी ओढव

तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण के कार्यक्रम का आयोजन सिंघवी भवन में किया गया। तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी के प्रथम अध्यक्ष बंसीलाल बडाला एवं प्रथम मंत्री प्रकाश बाफना द्वारा ध्वज वंदन किया गया। साध्वी काव्यलता जी ने उद्बोधन देते हुए सभी श्रावक समाज असली स्वतंत्रता प्राप्त करने का आह्वान किया।

सैंथिया

तेरापंथ युवक परिषद, सैंथिया द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ध्वजारोहण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद सैंथिया द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। लगभग 78 लोगों ने ब्लड टेस्ट, शुगर टेस्ट, ब्लडप्रेसर एवं थायरॉयड चेकअप का लाभ लिया।

राजाजीनगर

78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ श्रीरामपुरम स्थित सरकारी स्कूल में संपादित स्थाई सेवा कार्य कन्या आश्रय में ध्वजारोहण एवं मानव सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तेरापंथ राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश चौरडिया एवं प्रायोजक परिवार से टीकम चंद हिंगड़ द्वारा ध्वजारोहण किया गया। स्कूल के बच्चों द्वारा देश के नाम समर्पित विभिन्न गीतों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। तेरापंथ अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने सभी का स्वागत करते हुए स्कूल के बच्चों को भारत का भविष्य बताया। स्कूल के लगभग 150 बच्चों को स्टेशनरी किट वितरित किया गया। सेवा सारथी संयोजक मुकेश भंडारी का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

हुबली

तेरापंथ युवक परिषद हुबली द्वारा 78वां स्वतंत्रता दिवस सरकारी स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों ने ध्वजारोहण कर राष्ट्रगान का संचालन किया। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख अतिथियों ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

देने वाले वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की और युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों पर चलने का संदेश दिया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विशाल बोहरा ने अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री विनोद भंसाली ने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम में स्कूल के अध्यापक, अध्यापिका, स्टाफ और 500 बच्चे सम्मिलित हुए।

रतलाम

भारत के 78वें स्वतंत्रता दिवस पर तेरापंथ सभा भवन में तेरापंथ युवक परिषद, रतलाम द्वारा ध्वजारोहण समारोह का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में समाज के उपस्थित वरिष्ठजनों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। तत्पश्चात राष्ट्रगान का संगान किया गया।

इचलकरंजी

तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी ने 78वें स्वतंत्रता दिवस पर कन्या सुरक्षा सर्किल पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से की। महिला मंडल की अध्यक्ष शिल्पी बाफना ने सबका स्वागत किया। तेरापंथ अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पंकज जोगड़ ने ध्वजारोहण के नियम सभी को बताये। तेरापंथ सभा के सदस्य केवलचंद ढेलडिया ने ध्वजारोहण किया। मंत्री मीना भंसाली ने हर घर तिरंगा अभियान के बारे में बताते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ युवक परिषद संस्था भीलवाड़ा द्वारा 78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में साध्वी कीर्तिलता जी टाणा-4 के सान्निध्य में देश भक्ति गीतों की प्रतियोगिता का कार्यक्रम तेरापंथ भवन, नागोरी गार्डन में आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की। अध्यक्ष पीयूष रांका ने सभी का स्वागत किया। इस प्रतियोगिता को दो ग्रुप में आयोजित किया गया। 6 से 12 वर्ष के बच्चे और 12 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के प्रतिभागी। इसमें 36 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के संयोजक संदीप बोर्दिया एवं दीपांशु झाबक थे। निर्णायक की भूमिका मुकुन राठौड़ और दीपा पेशवानी ने निभाई। 6 से 12 वर्ष की आयु में प्रथम कनिका रांका, द्वितीय अर्हम जैन और तृतीय जेनिल जैन रहे। 12वर्ष से अधिक आयु

में प्रथम नेहा छाजेड़, द्वितीय प्रज्ञा काठेड़ और तृतीय खुशी चौरडिया रहे। तेरापंथ मंत्री महावीर खाब्या ने आभार व्यक्त किया।

साउथ हावड़ा

78वें स्वतंत्रता दिवस पर तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम क्षेत्र के महाप्रज्ञ स्तम्भ पर बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ, तत्पश्चात ध्वजारोहण के साथ राष्ट्रगान का संगान हुआ। तेरापंथ साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए अपना वक्तव्य रखा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के ट्रस्टी संजय नाहटा, परिषद के प्रबुद्ध विचारक अशोक कोठारी, साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष मदन नाहटा एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारियों ने झंडा फहरा कर स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर अपने भाव रखे। कार्यक्रम में सभा, महिला मंडल, युवकों एवं किशोरों ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई। उपाध्यक्ष विक्रम भंडारी ने स्वतंत्रता दिवस पर तेरापंथ द्वारा आयोजित कार्यक्रम सेवा कार्य, मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव एवं अभिनव टॉक शो कार्यक्रम से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अमित बेगवानी ने किया एवं आभार ज्ञापन संयोजक नीरज बांठिया ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पर्यवेक्षक आदेश चोरडिया, संयोजक मनीष बैद, अभिषेक खटेड़, नीरज बांठिया का विशेष श्रम रहा।

कांटाबांजी

समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी, समणी क्षांति प्रज्ञा जी के सान्निध्य में 78वें स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। ध्वजारोहण तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष किशन जैन द्वारा किया गया। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में फैसी ड्रेस प्रतियोगिता में बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक बॉबी जैन और यश जैन थे। प्रतियोगिता दो ग्रुप में की गई जूनियर और सीनियर। जूनियर प्रतियोगिता में प्रथम अरिहंत जैन, द्वितीय रौनित जैन और तृतीय रिया जैन एवं सीनियर में प्रथम पुनिया जैन, द्वितीय माही जैन और तृतीय विधि जैन एवं अक्षत जैन रहे। कार्यक्रम में सभा, महिला मण्डल, तेरापंथ के सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल

संचालन स्मिता जैन ने किया।

पूर्वी दिल्ली

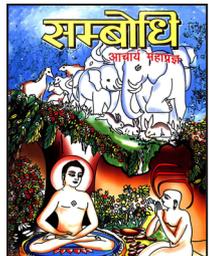
तेरापंथ महिला मंडल द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम कन्या सुरक्षा सर्किल विवेकानंद महिला कॉलेज के सामने किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। तत्पश्चात् अध्यक्ष सरोज सिपानी ने पधार्य हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों और बहनों का स्वागत किया। विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने झंडा रोहण किया। गोयल ने कहा कि मुझे गर्व है कि महिलाएं इतना अच्छा काम कर रही हैं और कन्याओं को आगे लेकर आ रही हैं। दिल्ली सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, ओसवाल भवन के अध्यक्ष आनंद बुच्चा आदि ने अपने विचार प्रकट किये। कन्या मंडल ने सुंदर गीतिका की प्रस्तुति दी। मंत्री सुमन भंडारी ने सबका आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम संयोजिका प्रेम भंसाली का श्रम सराहनीय रहा। लगभग 150 बहनों की उपस्थिति से कार्यक्रम सफल रहा।

गाँधीनगर, बेंगलुरु

78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ बेंगलुरु द्वारा नंदिनी लेआउट, बेंगलुरु स्थित आचार्य महाप्रज्ञ हाई स्कूल में ध्वजारोहण एवं मानव सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तेरापंथ बेंगलुरु अध्यक्ष विमल धारीवाल, मंत्री राकेशकुमार चौरडिया ध्वजारोहण किया गया। स्कूल के बच्चों द्वारा देश के नाम समर्पित विभिन्न भाषाओं में अपना वक्तव्य, गीतों से और नुक्कड़ नाटक से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। तेरापंथ अध्यक्ष विमल धारीवाल ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं, आपको और हम सबको देश के प्रति पूर्ण निष्ठा रखनी चाहिए। हमें अपने जीवन में नैतिकता की भावना रखनी है, एक आदर्श विद्यार्थी एवं सच्चे नागरिक होने का दायित्व निभाना चाहिए। मंत्री राकेश चौरडिया ने अपनी भावना प्रस्तुत की। प्रदीप चौपड़ा ने कन्नड़ भाषा में अपने विचार रखे। स्कूल के ट्रस्टी मनोहर भारती ने परिषद परिवार की प्रशंसा करते हुए कहा आपने जो यह क्रम पिछले कई सालों से जो बना रखा है वो अक्षुण्ण है और आगे भी निरंतर गतिमान रहेगा ऐसा विश्वास है। 20 बच्चों को छात्रवृत्ति विमल रांका परिवार के सहयोग से प्रदान की गई।



संबोधि



गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

समभाव की प्राप्ति का साधन जागरूकता है। जो व्यक्ति पल-पल जागरूक रहता है, वही समभाव की ओर बढ़ सकता है। पहले आठ व्रतों की सामान्य मर्यादा के अतिरिक्त थोड़े समय के लिए विशेष मर्यादा करना, अहिंसा आदि की विशेष साधना करना देशावकाशिक व्रत है।

३६. सावद्ययोगविरतिः, सोपवासा विधीयते।
द्रव्यक्षेत्रादिभेदेन, पौषधं तद् भवेद् व्रतम्॥

उपवासपूर्वक-१. द्रव्य-वस्तुओं की मर्यादा करना। २. क्षेत्र-क्षेत्र संबंधी मर्यादा करना। ३. काल-अहोरात्र। ४. भाव-राग-द्वेष रहित। इन चार प्रकार से सावद्य योग-असत् प्रवृत्ति की विरति करना पौषध व्रत कहलाता है।

इस साधना में पूर्ण उपवास व्रत से युक्त होकर व्यक्ति एक दिन के लिए साधुचर्या में आ जाता है। उसकी गति, अगति आदि शारीरिक क्रियाएं प्रमाद-रहित होती हैं। समभाव की साधना को पुष्ट करने के लिए ऐसे लम्बे समय की अपेक्षा रहती है, वह इसमें पूर्ण हो जाती है। यह साधु-जीवन का पूर्वाभ्यास है।

३७. प्रासुकं दोषमुक्तञ्च, भक्तपानं प्रदीयते।
मुनये संविभज्याऽथ, संविभागोऽतिथेव्रतम्॥

अपनी वस्तु का संविभाग कर, स्वयं कुछ कम खाकर साधु को प्रासुक-अचित्त और दोष-रहित जो भोजन दिया जाता है, उसे अतिथि-संविभाग व्रत कहा जाता है।

दान के विशुद्ध अधिकारी साधु ही हैं, जो केवल अहिंसा, आत्मसाधना और अध्यात्म-जागरण के लिए जीते हैं। वे केवल लेना ही नहीं जानते, दान का प्रतिदान भी करते हैं। किन्तु उनका प्रतिदान भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है। वे मनुष्यों की अंतश्चेतना को जागृत करते हैं, उन्हें नैतिक और धर्मनिष्ठ बनाते हैं।

साधुओं का भोजन विशुद्ध होता है। विशुद्ध का अभिप्राय है जो भोजन मुनि के लिए निर्मित न हो, सचित्त सजीव न हो, सचित्त वस्तुओं से स्पृष्ट न हो और जो मुनि के योग्य हो।

गृहस्थ श्रावक का यह धर्म है कि वह स्वनिर्मित भोजन में से मुनि को आहार दे। दान धर्म है। दान की विशुद्ध भावना से कर्म-निर्जरा होती है और उत्कट भाव-विशुद्धि से व्यक्ति संसार का अंत कर देता है। इस दान में कोई स्वार्थ नहीं रहता। यह आत्मशुद्धिमूलक होने से मोक्ष का एक अंग है। इसी को अतिथि संविभाग व्रत कहा है। श्रावकों के व्रतों के साथ इसका अभिन्न संबंध है। पांच अणुव्रतों की पुष्टि के लिए और आत्म पवित्रता के लिए इन अन्य व्रतों की रचना की गई है।

३८. संलेखनां प्रकुर्वीत, श्रावको मारणान्तिकीम्।
मृत्युं सन्निहितं ज्ञात्वा, मृत्योरविचलाशयः॥

मृत्यु से न डरने वाला श्रावक मृत्यु को सन्निहित-पास में जानकर मारणान्तिक संलेखना करे।

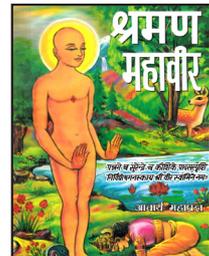
जीना जैसे एक कला है वैसे मरना भी। सहस्रों व्यक्तियों में से कोई एक व्यक्ति जीने की कला में अभिज्ञ होता है। मरने की कला जीने की कला से कोई कम नहीं है। जिसे जीने की कला आती है उसे मरने की कला भी सीखनी चाहिए। जैन दर्शन जीने और मरने दोनों की कलाएं सिखाता है। जीवन उसके लिए हर्ष नहीं है और मृत्यु विषाद नहीं है। जैन दर्शन साधक को यह संदेश देता है कि देह का भेद करो, मृत्यु से डरो मत लेकिन मौत को डरा दो। साधकों ने मृत्यु को महोत्सव माना है।



-आचार्यश्री महाश्रमण

श्रमण महावीर

अनुकूल उपसर्गों के अंचल में



'दूसरी रूपसी आगे आकर कहने लगी- 'तुम ठीक से देखो, यह पुरुष तो है न?

'तीसरी बोली, 'मुझे लगता है, यह कोई नपुंसक है। यदि पुरुष होता तो हमारी उपेक्षा कैसे करता?'

तीनों एक साथ कहने लगीं- 'कुमार! अभी युवा हो। इस यौवन को अरण्य-पुरुष की भांति व्यर्थ ही क्यों गंवा रहे हो? लगता है, तुम्हें प्रकृति से रूप का वरदान मिला, पर परिवार अनुकूल नहीं मिला। इसीलिए तुम उसे छोड़ अकेले घूम रहे हो। हम तुम्हारे लिए सर्वस्व का निछावर करने को तैयार हैं। फिर यह मोम का गोला आगी से क्यों नहीं पिघल रहा है?'

तीनों के हाव-भाव, विलास और विभ्रम बढ़ गए। उन्होंने रतिप्रणय की समग्र चेष्टाएं कीं। पर भगवान् पर उनका कोई प्रभाव नहीं हुआ।

भगवान् ऊर्ध्व, तिर्यक् और अधः- तीनों प्रकार का ध्यान करते थे। वे ऊर्ध्व ध्यान की साधना के द्वारा काम-वासना के रस को विलीन कर चुके थे। इसलिए उद्दीपन की सामग्री मिलने पर भी उनका काम जागृत नहीं हुआ। चलते-चलते उनके सामने दुस्तर महानदी आ गई। पर वे ध्यान की नौका द्वारा उसे सहज ही पार कर गए।

मिट्टी का गोला आग की आंच से प्रदीप्त होता है, किन्तु पिघलता नहीं।

४. श्यामाक वैशाली का प्रसिद्ध वीणावादक है। वह वीणा बजाने की तैयारी कर रहा है। भगवान् सिद्धार्थपुर से विहार कर वैशाली पहुंच रहे हैं। श्यामाक ने भगवान् को देखकर कहा, 'देवार्थ! मैं वीणा-वादन प्रारम्भ कर रहा हूँ। आप इधर से सहज ही चले आए हैं। यह अच्छा हुआ। कुछ ठहरिए और मेरा वीणा-वादन सुनिए। मैं आपको और भी अनेक कलाएं दिखाना चाहता हूँ। भगवान् ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। वे आगे बढ़ गए।'

इस घटना की मीमांसा का एक कोण यह है कि भगवान् इतने नीरस हैं कि वे कलाकार की कोमल भावना और सधी हुई उंगलियों के उत्क्षेप-निक्षेप की अवहेलना कर आगे बढ़ गए। तो दूसरा कोण यह है कि भगवान् अन्तर्नाद से इतने तृप्त थे कि उन्हें वीणा-वादन की सरसता लुभा नहीं सकी।

५. श्रावस्ती की रंगशाला जनाकुल हो रही है। महाराज ने नाटक का आयोजन किया है। नट मण्डली के कौशल की सर्वत्र चर्चा है। मण्डली के मुखिया ने भगवान् को देख लिया। उसने भगवान् से रंगशाला में आने का अनुरोध किया। भगवान् वहां जाने को सहमत नहीं हुए। नट ने कहा, 'क्या आप नाटक देखने को उत्सुक नहीं हैं?'

'नहीं।'

'क्यों, क्या नाटक अच्छा नहीं लगता?'

'अपनी-अपनी दृष्टि है।'

'क्या ललितकला के प्रति दृष्टि-भेद हो सकता है?'

'ऐसा कुछ भी नहीं जिसके प्रति दृष्टि-भेद न हो सके।'

'यह अज्ञानी लोगों में हो सकता है, पर आप तो ज्ञानी हैं।'

'ज्ञानी सत्य की खोज में लगा रहता है। यह विश्व के कण-कण में अभिनय का अनुभव करता है। वह अणु-अणु में प्रकम्पन और गतिशीलता का अनुभव करता है। उसकी रसमयता इतनी व्याप्त हो जाती है कि उसके लिए नीरस जैसा कुछ रहता ही नहीं। अन्य सब शास्त्रों को जानने वाला क्लेश का अनुभव करता है। अध्यात्म को जानने वाला रस का अनुभव करता है। गधा चन्दन का भार ढोता है, और भाग्यशाली मनुष्य उसकी सुरभि और शीतलता का उपभोग करता है।'

नट का सिर श्रद्धा से नत हो गया। वह प्रणाम कर रंगशाला में चला गया।

(क्रमशः)

(क्रमशः)



धर्म है उत्कृष्ट मंगल



धर्म है
उत्कृष्ट मंगल

आचार्य महाश्रमण

-आचार्यश्री महाश्रमण समाधि-वृद्धि का प्रयोग



रौद्र ध्यान के चार लक्षण हैं-

१. उत्सन्न दोष- प्रायः हिंसा आदि में प्रवृत्त रहना।
२. बहुदोष- हिंसा आदि की विविध प्रवृत्तियों में संलग्न रहना।
३. अज्ञान दोष- अज्ञानवश हिंसा आदि में प्रवृत्त होना।
४. आमरणान्त दोष- मरणान्त तक हिंसा आदि करने का अनुताप न होना।

आर्त्त ध्यान में कामाशंसा और भोगाशंसा की प्रधानता होती है और रौद्र ध्यान में क्रूरता की प्रधानता होती है। ये दोनों ही अशुभ एवं अनुपादेय हैं। इनमें भी मन की एकाग्रता होती है, इसलिए इन्हें भी ध्यान के अन्तर्गत लेना असंगत नहीं है।

धर्म्य ध्यान के चार प्रकार हैं-

- आज्ञाविचय- प्रवचन के निर्णय में संलग्न चित्त।
- अपाय विचय- दोषों के निवारण में संलग्न चित्त।
- विपाक विचय- कर्म फलों के निर्णय में संलग्न चित्त।
- संस्थान विचय- विविध पदार्थों के आकृति निर्णय में संलग्न चित्त।

धर्म्य ध्यान के चार लक्षण हैं-

१. आज्ञारुचि- प्रवचन में श्रद्धा होना।
२. निसर्गरुचि- सहज ही सत्य में श्रद्धा होना।
३. सूत्ररुचि- सूत्र में पढ़ने के द्वारा सत्य में श्रद्धा उत्पन्न होना।
४. अवगाढ़ रुचि- विस्तृत पद्धति से सत्य में श्रद्धा होना।

धर्म्य ध्यान के चार आलम्बन हैं-

१. वाचना- पढ़ना।
२. प्रतिप्रच्छना- शंका निवारण के लिए प्रश्न करना।
३. परिवर्तना- पुनरावर्तन करना।
४. अनुप्रेक्षा- अर्थ का चिन्तन करना।

धर्म्य ध्यान की चार अनुप्रेक्षाएं हैं-

१. एकत्व-अनुप्रेक्षा- अकेलेपन का चिन्तन करना।
२. अनित्य-अनुप्रेक्षा- पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन करना।
३. अशरण-अनुप्रेक्षा- अशरणदशा का चिन्तन करना।
४. संसार-अनुप्रेक्षा- संसार परिभ्रमण का चिन्तन करना।

अविरत, देशविरत, प्रमत्त संयत और अप्रमत्त संयत- इन सबको धर्म्य ध्यान करने की योग्यता प्राप्त हो सकती है।

शुक्ल ध्यान के चार प्रकार हैं-

१. पृथक्त्व वितर्क सविचारी
२. एकत्व वितर्क अविचारी
३. सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति
४. समुच्छिन्नक्रिया अप्रतिपाती।

शुक्ल ध्यान के चार चरण हैं। उनमें प्रथम दो चरणों पृथक्त्व वितर्क सविचारी और एकत्व वितर्क अविचारी के अधिकारी श्रुतकेवली (चतुर्दशपूर्वी) होते हैं। इस ध्यान में सूक्ष्म द्रव्यों और पर्यायों का आलम्बन लिया जाता है इसलिए सामान्य श्रुतधर इसे प्राप्त नहीं कर सकते।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री श्री शिववक्स जी (माधोपुर) दीक्षा क्रमांक : 128

मुनिश्री बड़े त्यागी, विरागी और घोर तपस्वी थे। आपने साधना रूपी अग्नि में प्रवेश कर स्वयं के जीवन को चमकाया। सं 1904 से आपने जीवन पर्यंत. चार विगय (दूध, दही, तेल, मिष्ठान) का त्याग कर दिया। 1908 से आजीवन दीपावली के समय तेला करने का नियम किया। 1918 से प्रत्येक माह चार बेले करने का संकल्प किया। 1929 में औषध के अतिरिक्त आजीवन सेलड़ी की वस्तु (जिसमें गुड़, शक्कर, चीनी मिली हुई हो) का परित्याग कर दिया। 1942 से एकान्तर तप प्रारम्भ किया, जो 1944 तक चला। 1944 से निरन्तर बेले-बेले तप शुरू किया, जो 1946 तक चला। 1946 से चौविहार बेले-बेले तप चला। मुनिश्री द्वारा की गई उत्कृष्ट तपस्या की तालिका इस प्रकार है- उपवास/अनेक बार, बेले/1621, 3/46, 4/9, 6/1, 8/7, 9/3, 10/1, 13/1, 14/2, 15/3, 16/4, 17/2, 18/2, 21/2, 26/1, 31/1। मुनिश्री ने दीक्षित होने के पश्चात् जीवन पर्यन्त शीतकाल में एक पछेवड़ी में रहकर शीत सहन किया।

- साभार: शासन समुद्र -

सितम्बर 2024

सप्ताह के विशेष दिन

16 सितम्बर

आचार्यश्री भिक्षु
चरमोत्सव एवं
आचार्यश्री भारीमल जी
पट्टोत्सव

17 सितम्बर

पक्खी

18 सितम्बर

आचार्यश्री
कालूराम जी दीक्षा
दिवस

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
समाचार प्रेषकों से निवेदन

समाचार केवल वर्ड या पीडीएफ
फॉर्मेट में abtyptt@gmail.com
ईमेल पर ही भिजवाएं।

निवेदक : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स



ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.org



भाई-बहन के त्यौहार रक्षाबंधन पर विविध आयोजन

डोंबिवली

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी स्वामी के सान्निध्य में रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा डोंबिवली सभा भवन में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने विचार प्रकट करते हुए फरमाया कि जैन संस्कार विधि परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी के युग में प्रारंभ हुई। इस विधि का मूल उद्देश्य है कि सांसारिक उत्सवों को मनाते हुए भी हिंसा से अहिंसा की ओर, असंयम से संयम की ओर, भोग से त्याग की ओर गतिमान बने रहना और हमारे मांगलिक कार्यों में भी जैनत्व झलके। आज रक्षाबंधन की कार्यशाला रखी गई है, रक्षाबंधन पर्व सदियों से चला आ रहा है पर हम समझें कि इसका क्या महत्व है? यह भाई बहन से संबंधित पर्व है। भाई बहन का निर्मल प्रेम बना रहे। भाई-बहन शिशु, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध किसी भी अवस्था के हो सकते हैं। अक्सर बहन भाई के घर राखी बांधने आती है, उसके पीछे यह राज रहता है कि मेरा भाई शक्तिशाली हो, उसकी उज्ज्वलता बढ़े, सबके साथ मधुर व्यवहार हो ताकि समय आने पर मेरी भी रक्षा कर सके। इस प्रकार के भावों का अगर व्यापक प्रचार प्रसार हो तो आपसी मनो मालिन्य समाप्त हो सकता है। कार्यशाला में ठाणे कोपरी से समागत संस्कारक दिनेश चोरडिया व कमलेश दुग्गड ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का डेमो प्रदर्शित किया। कस्टम ऑफिसर सारिका जैन की भी उपस्थिति रही। युवक परिषद् मंत्री संजय खाब्या ने आभार ज्ञापन किया।

सरदारशहर

डॉ. साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा - भारतीय परम्परा में पर्वों का विशेष महत्व रहा है। मुख्य चार पर्वों की विशेष भूमिका रही है। चार पर्व हैं- दीवाली, होली, दशहरा, रक्षाबंधन। रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र सम्बन्ध की सुवास बिखेरता है। अंगूठे से तिलक लगाने पर दर्शन केन्द्र से ज्योति केन्द्र तक का स्थान जागृत होता है। चावल-अक्षय बनने की प्रेरणा देता है। मौली - कलाई पर बांधते हैं, जिसका मतलब है तुम अपने विकारों पर नियंत्रण रखो। मुंह मीठे से तात्पर्य है वाणी को इष्ट, मिष्ट, शिष्ट, विशिष्ट बनाओ। रिटर्न गिफ्ट के रूप में भाई बहन

को रुपए, आभूषण, वस्त्र के साथ सुरक्षा का आश्वासन देता है। परिषद् सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया। परिषद् अध्यक्ष लोकेश जैन ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाने की प्रेरणा प्रदान की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी भाई-बहनों ने रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया।

राजाजीनगर

अभातेयुप निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने सभी का स्वागत किया। संस्कारक राजेश देरासरिया, सतीश पोरवाड़ और रनीत कोठारी ने जैन संस्कार विधि का परिचय देते हुए रक्षाबंधन की विधि का डेमो प्रस्तुत किया। कार्यशाला में 63 भाई-बहन के जोड़ों को स्वास्तिक और तेरापंथ के प्रथम अक्षर 'टी' के आकार में बिठाकर रक्षाबंधन की रस्म पूरी की गई। इस कार्यक्रम में 5 से 55 वर्ष तक के भाई-बहनों ने भाग लिया और 155 सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यशाला के अंत में सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी और महिला मंडल अध्यक्ष उषा चौधरी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम को सफल बनाने में पीपाड़ा परिवार का सहयोग रहा, संयोजक अनिल बोल्या के विशेष श्रम की सराहना की गई। आभार जयंतिलाल गांधी ने व्यक्त किया।

अमराइवाड़ी ओढव

अभातेयुप के निर्देशन में एवं तेयुप अमराइवाड़ी द्वारा आयोजित जैन संस्कार विधि द्वारा रक्षा बंधन कार्यशाला का आयोजन सिंघवी भवन अमराइवाड़ी में साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम को अमराइवाड़ी ओढव के जैन संस्कारक दिनेश टुकलिया और पंकज डांगी ने तेरापंथी सभा एवं तेयुप के पदाधिकारियों से मंगल भावना यंत्र की स्थापना करवाते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ संपादित करवाया। जैन संस्कार विधि के बारे में सभी को विशेष जानकारी एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के बाद उपस्थित सभी बहनों ने अपने भाइयों को रक्षा सूत्र बांधे। सभी सदस्यों ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने का संकल्प किया। 21 भाई बहन के जोड़ों ने इस आयोजन में भाग लिया। स्वागत तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी एवं आभार ज्ञापन संस्कारक पंकज डांगी द्वारा किया गया।

लिलुआ

अभातेयुप निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन बेलूड-बाली तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया। संस्कारक राकेश सिंधी ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाने की प्रक्रिया को सरल शब्दों में समझाया। तेरापंथ महिला मंडल, बेलूड-बाली की अध्यक्ष कनक डाकलिया सहित 13 बहनों, 17 भाइयों और 1 किशोर ने कार्यशाला में सहभागिता दर्ज कराई। बेलूड-बाली सभा से केवल सिंधी ने गीतिका के माध्यम से अपनी भावना रखी। तेयुप लिलुआ की ओर से मंत्री जयंत घोड़ावत ने संस्कारक और महिला मंडल का रक्षाबंधन कार्यशाला को संपन्न कराने को आभार ज्ञापन किया।

धुबड़ी

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् धुबड़ी ने स्थानीय तेरापंथ भवन में रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया। तेयुप अध्यक्ष बजरंग कुंडलिया ने कार्यशाला में पधारें सभी संभागियों का स्वागत किया। जैन संस्कारक आनंद बरडिया ने बड़े ही व्यवस्थित तरीके से मौजूद संभागियों को जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने की विधि समझाई और ज्यादा से ज्यादा लोगों से जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन मनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम संयोजक सुधीर सिंधी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

गुवाहाटी

जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला और सामूहिक जन्मोत्सव का आयोजन मुनि प्रशांत कुमारजी एवं मुनि कुमुदकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मस्थल में किया गया। कार्यशाला में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांतकुमार जी ने कहा- शुभ भविष्य के लिए मंगलकामना करनी चाहिए। जैन संस्कार विधि में आशीर्वाद रूपी मंत्रों का उच्चारण किया गया। मंगलकारी मंत्रों के उच्चारण से आपका जीवन ज्यादा सुखी हो, विघ्न-बाधा न आए, ऐसी मंगलभावना इस विधि में की जाती है। मौज-मस्ती, होटल इत्यादि में मनाना हमारी संस्कृति नहीं है। हमें अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा संस्कारों पर गर्व होना चाहिए। हमारे संस्कार हमारी पहचान हैं। संस्कारों के विकास से ही जीवन का उत्थान होता है। तेयुप अध्यक्ष सतीश भादानी ने कार्यक्रम में उपस्थित

सभी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। संस्कारकों द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला में भाई-बहनों के जोड़ों के साथ लाइव डेमो दिया गया एवं पवित्र मंत्रों का उच्चारण एवं उनका अर्थ भी समझाया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री पंकज सेठिया व आभार ज्ञापन सहमंत्री राहुल नाहटा ने किया।

सरदारपुरा

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् सरदारपुरा द्वारा मेघराज तातेड भवन में साध्वी प्रमोदश्री जी आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्कारक भूपेश तातेड, जीतेन्द्र गोगड़, गौरव बरमेचा और कैलाश तातेड ने साथ मिलकर रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से मनाने की जानकारी विधि सहित प्रदान की। इस अवसर पर आयोजन स्थल पर 15 भाई बहन ने विधिपूर्वक राखी बांधी। साध्वी प्रमोदश्री जी ने जैन संस्कार बच्चों में जगाने की प्रेरणा दी। तेरापंथ युवक परिषद् सरदारपुरा के अध्यक्ष मिलन बांठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। जिनेन्द्र बोथरा ने सभी का आभार प्रकट किया।

मण्डिया

साध्वी संयमलता जी ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। बैंगलोर से पधारें संस्कारक जितेन्द्र घोषाल एवं विक्रम दुग्गड ने विधि विधान से उपस्थित लगभग 21 भाई-बहन के जोड़ों को राखी बंधवाई। साध्वी संयमलता जी ने कहा कि रक्षाबंधन भाई और बहन का पर्व है, इस पर्व पर बहिन अपने भाई की कलाई पर रक्षा का धागा बांधती है और भाई उस बांधे गए धागे की रक्षा मतलब अपनी बहन को उसकी रक्षा का वादा करता है। कार्यशाला के पश्चात स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में ज्ञानशाला के बच्चों ने संवाद द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों के पात्रों से उपस्थित श्रावकों को आकर्षित किया। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद्, महिला मंडल, कन्या मंडल श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

उधना

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् उधना एवं तेरापंथ किशोर मंडल उधना द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला का

आयोजन तेरापंथ भवन उधना में किया गया। संस्कारक जसवंत डांगी, कुशल चंडालिया, अनिल सिंघवी एवं कमलेश डांगी ने इस कार्यशाला को जैन संस्कार विधि से संपादित किया। कार्यशाला में वात्सल्यपुरम अनाथालय के बच्चे उपस्थित थे। किशोर मंडल एवं परिषद् के साथियों को इन बच्चियों ने राखी बांधी। इस कार्यशाला में तेरापंथ युवक परिषद् उधना के अध्यक्ष गौतम आंचलिया, मंत्री अर्पित नाहर, पदाधिकारी, किशोर मंडल प्रभारी निमेष बाफना, सह-प्रभारी मयंक नाहर एवं सम्पूर्ण किशोर मंडल टीम ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

बड़ोदरा

अभातेयुप द्वारा निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन वडोदरा में हुआ। जैन संस्कारक दीपक श्रीमाल एवं महावीर हिरण ने नमस्कार महामंत्र एवं मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ तेयुप अध्यक्ष किशोर बैद एवं मंत्री सुमित कोठारी से मंगलभावना पत्र स्थापित करवाया। विधि विधान एवं समुचित मंत्रोच्चार के साथ बच्चों को रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से कैसे मनाया जाए, यह बताया। तेयुप, महिला मंडल, ज्ञानशाला एवं श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

भीलवाड़ा

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् संस्था भीलवाड़ा द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला साध्वी कीर्तिलता जी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, नागोरी गार्डन में आयोजित की गई। अध्यक्ष पीयूष रांका ने सभी का स्वागत किया। संस्कारक निर्मल सुतरिया एवं सुमित नाहर ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन पर्व मनाने के बारे में बताया। लगभग 76 भाई-बहनों ने एक दूसरे को राखी बांधकर रक्षाबंधन पर्व मनाया। इस कार्यक्रम के प्रायोजक शशि देवड़ा धर्मपत्नी स्वर्गीय राजमल सा देवड़ा, प्रियदर्शी-पायल देवड़ा का सम्मान किया गया। संयोजक लोकेश बोथरा, सुधीर दक और ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मिलकर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अंत में आभार तेयुप मंत्री महावीर खाब्या ने व्यक्त किया।



संक्षिप्त खबर

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल, कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा अस्तित्व ओनर्स एसोसिएशन के सहयोग से कम्युनिटी हॉल, अस्तित्व अपार्टमेंट में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में कुल 46 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। शिविर के संयोजक रितेश नाहर एवं प्रमोद छाजेड़ का विशेष श्रम रहा। एक अन्य शिविर पनाश अपार्टमेंट ऑनर्स एसोसिएशन के सहयोग से क्लब हाउस, पनाश कॉम्प्लेक्स में आयोजित किया गया जिसमें कुल 61 यूनिट रक्त संग्रहित हुआ। शिविर संयोजक पंकज आंचलिया, जसवंत सेठिया एवं अभिषेक कोचर का सराहनीय योगदान रहा। परिषद ने एटीडीसी के माध्यम से सभी रक्तदाताओं का निःशुल्क HbA1C परीक्षण करवाया। शिविर के प्रायोजक पवन जैन दुगड़ रहे।

फिजिकल मिशन इंपॉवरमेंट कार्यशाला

कांदिवली (मुंबई)। साध्वी डॉ. मंगलप्रजाजी के सान्निध्य में एवं अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ टास्क फोर्स - 'TTF' के सहयोग से तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली ने फिजिकल मिशन इंपॉवरमेंट 'सशक्तीकरण जन-जन का' कार्यशाला का सफल आयोजन तेरापंथ भवन कांदिवली में किया गया। कार्यशाला में ट्रेनर चिराग पामेचा ने बहुत सुन्दर, सरल एवं सुव्यवस्थित तरीके से कार्यशाला के महत्व एवं उपयोगिता की जानकारी प्रदान की। उन्होंने जल जाने पर, चोट लग जाने पर, गले में कुछ अटक जाने पर, फ्रैक्चर हो जाने जैसी अवांछनीय घटनाओं पर कैसे बिना घबराएँ स्वयं एवं औरों को संभालना के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। इस कार्यशाला में टीटीएफ के सहप्रभारी मयंक धाकड़, शाखा प्रभारी प्रशांत तातेड़, तेरापंथी सभा कांदिवली के कार्यकारी अध्यक्ष मुकेश कुमठ, तेयुप मलाड़ के अध्यक्ष जयंती मादरेचा, तेयुप कांदिवली के अध्यक्ष राकेश सिंघवी, मंत्री पंकज कच्छरा एवं श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

प्रतिक्रमण कार्यशाला का आयोजन

सरदारशहर। डॉ. साध्वी शुभप्रभा जी के सान्निध्य में 'प्रतिक्रमण कार्यशाला' का आयोजन किया गया। साध्वी शुभप्रभा जी ने कहा - प्रतिक्रमण हमारे लिए अत्यावश्यक उपक्रम है। इसके बिना जीवन में पवित्रता, शुद्धता, सरलता का प्रवेश संभव नहीं है। यहां तक कि जब तक साधक को प्रतिक्रमण कंठस्थ नहीं हो पाए उसे छेदोपस्थापनीय चारित्र भी नहीं आता। मुख्य वक्ता सूर्यप्रकाश श्यामसुमा (राष्ट्रीय संयोजक उपासक श्रेणी) ने बहुत सरस, सरल, प्रभावोत्पादक शैली में प्रतिक्रमण क्या, क्यों, इसके प्रकार एवं आत्मविकास की दृष्टि से इसकी उपयोगिता आदि को विवेचित किया तथा प्रत्येक शब्द की समुचित मीमांसा भी की। विनोद तातेड़ ने 21 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। साध्वी वृंद ने तप गीत का संगान किया। ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका कान्ता चिण्डालिया में संस्कृत चौबीसी से कार्यक्रम का मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री मनीषा बैद ने कुशलतापूर्वक किया।

संगठन यात्रा का आयोजन

इरोड। अभातेमम कार्यसमिति सदस्य और तमिलनाडु प्रभारी माला कातरेला और अनीता बरडिया संगठन यात्रा के तहत इरोड पहुँचीं। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई, मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। माला कातरेला ने साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी का संदेश और मंजू बोथरा ने अभातेमम अध्यक्ष सरिता डागा का संदेश पढ़ा। माला कातरेला और अनीता बरडिया ने अभातेमम की योजनाओं पर चर्चा करते हुए रस्वस्थ परिवार स्वस्थ समाजर के सात सूत्र और समृद्ध राष्ट्र योजना पर प्रकाश डाला। इरोड महिला मंडल ने भावना चौका के लिए सहयोग राशि प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन मंजू बोथरा ने और धन्यवाद ज्ञापन पुनम दुगड़ ने किया।

भाई-बहन के त्यौहार रक्षाबंधन पर विविध आयोजन

इचलकरंजी

अभातेयुप निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद इचलकरंजी द्वारा जैन संस्कार विधि से 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वीश्री के मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। संस्कारक पंकज जोगड़ ने संस्कार विधि पूर्ण करवाई एवं जैन मंत्रों व स्तोत्रों के अर्थ का विवेचन किया। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने साध्वी श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की, संस्कारक, रक्षाबंधन कार्यशाला में आये हुए सभांगी सहित सभी सदस्यों का स्वागत किया। 'शासनश्री' साध्वी मंजूरेखाजी ने सुंदर गीतिका का संगान किया। रक्षाबंधन कार्यशाला में करीब 40 भाई-बहनों ने सहभागिता दर्ज कराई। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक बाफना, महिला मंडल अध्यक्ष शिल्पा बाफना एवं स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारी गण व श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक चेतन बैंगानी एवं सौरभ चोपड़ा और तेयुप व महिला मंडल के सदस्यों ने अपना श्रम निर्योजित किया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार अंकुश बाफना ने किया।

विजयनगर

तेरापंथ भवन, विजयनगर में साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में अभातेयुप निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री द्वारा मंगल मंत्रोच्चार से की गई साध्वी मलययशाजी, साध्वी आस्थाप्रभाजी, साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने रक्षाबंधन पर गीत का संगान किया। छत्रसिंह मालू ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष

विजयनगर

तेरापंथ सभा भवन में साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा- 4 द्वारा अभातेयुप निर्देशित बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला तेयुप विजयनगर के अंतर्गत करवाई गई। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त आगार धर्म के बारे में बताते हुए श्रावक-श्राविका समाज को बारहव्रती बनने की प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने आवश्यक हिंसा के अलावा संकल्पजा स्थूल हिंसा का कुछ अपवादों के साथ त्याग की

कमलेश चोपड़ा ने सभी को रक्षा बंधन की शुभकामनाएं देते हुए जैन संस्कार विधि से रक्षा बंधन मनाने का आह्वान किया। अभातेयुप जैन संस्कार विधि राष्ट्रीय सहप्रभारी विकास बांठिया ने जैन संस्कार विधि से रक्षा बंधन त्यौहार को मनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर विजयनगर के संस्कारक छत्रसिंह मालू, अभिषेक कावड़िया, श्रेयांस गोलछा, धीरज भादानी, कमलेश चोपड़ा, संजय भटेवरा, आशीष सिंघी, बसंत डागा ने मंगल मंत्रोच्चार किया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, भवन निर्माण समिति अध्यक्ष पुखराज श्रीश्रीमाल, तेयुप पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविका समाज की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री संजय भटेवरा ने किया। सहसंयोजक आशीष सिंघी का अच्छा श्रम रहा। आभार संयोजक धीरज भादानी ने किया।

हैदराबाद

अभातेयुप के निर्देशन में रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन 'शासनश्री' साध्वी शिवमालाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में डीवी कॉलोनी स्थित जैन तेरापंथ भवन में किया गया। जैन संस्कारक ललित लूनिया एवं जिनेंद्र बैद ने नमस्कार महामंत्र एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्र स्थापित करवाया। विधि विधान एवं समुचित मंत्रोच्चार के साथ सबको रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से कैसे मनाया जाए, यह बताया। अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने सभी का स्वागत करते हुए जैन संस्कार विधि की महत्ता पर प्रकाश डाला। महिला मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा ने आध्यात्मिक राखी के बारे में बताते हुए

बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर

प्रेरणा दी। पानी को हमेशा छानकर पीने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम की शुरुवात साध्वीश्री द्वारा सामूहिक नवकार के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। इसके पश्चात तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने स्वागत वक्तव्य देते हुए व्रती बनने हेतु आह्वान किया। इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारी एवं श्रावक-श्राविका समाज की गरिमामय उपस्थिति रही। संयोजक प्रियंकर छाजेड़ का श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

गुवाहाटी

मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप निर्देशित बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला तेयुप गुवाहाटी के अंतर्गत करवाई गई। मुनि श्री ने भगवान महावीर द्वारा गृहस्थों के लिए प्रदत्त आगार धर्म के बारे में बताते हुए श्रावक-श्राविका समाज को बारह व्रती बनने की प्रेरणा दी। मुनिश्री ने आवश्यक हिंसा के अलावा स्थूल हिंसा का कुछ अपवादों के साथ त्याग की प्रेरणा दी।

सभी को संकल्प दिलाये। कार्यशाला में बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और जैन संस्कार विधि के महत्व को समझा। मंत्री अनिल दुगर ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

राजराजेश्वरी नगर

अभातेयुप निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला की शुरुआत सामूहिक नवकार मंत्र के उच्चारण से हुई। अध्यक्ष बिकाश छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। संस्कारक दिनेश मरोठी ने विधि विधान से मंत्रोच्चारण कर कार्यशाला में पधारें भाई-बहनों को जैन संस्कार विधि से रक्षा बंधन मनाने की जानकारी दी। इस अवसर पर परिषद के पदाधिकारी, कार्यसमिति सदस्य एवं भाई-बहन के जोड़े परिवार सहित उपस्थित थे। कार्यशाला का सफल संचालन मंत्री सुपार्श पटावरी ने किया। आभार ज्ञापन जैन संस्कार विधि संयोजक गौतम नाहटा ने किया।

साउथ कोलकाता

अभातेयुप द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, साउथ कोलकाता में किया गया। कार्यशाला का संचालन संस्कारक महेंद्र दूगड़ द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ किया गया। उन्होंने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाने की प्रक्रिया को सरल शब्दों में समझाया। जैनत्व संस्कारों के बीजारोपण हेतु तेयुप द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में ११ भाई-बहन के जोड़ों ने सहभागिता दर्ज कराई। परिषद की ओर से अध्यक्ष मोहित बैद ने स्वागत व मंत्री कुलदीप लूनिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।



संक्षिप्त खबर

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

आमेट। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार, आमेट महिला मंडल द्वारा तेरापंथ सभा भवन में साध्वी विशद प्रज्ञा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और मंगलाचरण से हुई। साध्वी मननयशा जी ने चित्त समाधि का महत्व समझाते हुए जीवन में शांति और सादगी के संकल्प लेने पर जोर दिया। साध्वीश्री जी ने मंगल भावना, जप योग और प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। इसके बाद, महिला मंडल की बहनों ने बुजुर्गों की सेवा और धर्म के महत्व पर एक नाटक प्रस्तुत किया। साध्वी मंदारप्रभा जी ने कहा कि बाहरी परिस्थितियों को बदलना संभव नहीं हो तो मन की स्थिति को बदलना चाहिए। साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने वृद्धावस्था में जिम्मेदारियों से मुक्त होकर, मधुर व्यवहार और उपयोगिता सिद्ध करने की सलाह दी। साध्वी प्रशमयशाजी ने उपस्थित लोगों से ढलती उम्र में जीवन के परिवर्तन और चित्त समाधि के रहस्य पर प्रश्न किए, जिनका मार्मिक उत्तर प्राप्त हुआ। आभार अनिता छाजेड़ ने व्यक्त किया और कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री हेमलता भंडारी ने किया। इस कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

पर्यावरण की रक्षा-धरती मां की सुरक्षा

जसोल। मुनि यशवन्तकुमार जी के सान्निध्य में एवं अणुव्रत समिति जसोल अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा की अध्यक्षता में स्थानीय पुराना ओसवाल भवन में अणुव्रत कैरी बैग का विमोचन तेरापंथ महिला मंडल व अणुव्रत समिति के द्वारा किया गया। तेरापंथ महिला मंडल के अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडीया ने कहा कि प्लास्टिक की थैलियां मनुष्यों के साथ-साथ पशुओं में भी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा करती हैं, बेकार खाना और सब्जियां और फलों के छिलके आमतौर पर प्लास्टिक की थैलियों में फेके जाते हैं, पशु-पक्षी अक्सर खाना खाते समय प्लास्टिक के टुकड़े निगल लेते हैं। इसी तरह समुद्री जीव भी प्लास्टिक के टुकड़ों को भोजन समझ कर खा लेते हैं। प्लास्टिक थैलियां से होने वाला प्रदूषण विभिन्न बीमारियों का कारण भी हो सकता है। इस प्रकार प्लास्टिक बैग हमारे सुंदर पर्यावरण को बर्बाद कर रहे हैं। इसलिए प्लास्टिक बैग को छोड़ कपड़े का बैग उपयोग में लेना चाहिए।

महावीर के अर्थशास्त्र पर कार्यशाला

रायपुर। टैगोर नगर स्थित श्री लाल गंगा पटवा भवन में मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में 'महावीर के अर्थशास्त्र' पर विशेष व्याख्यान का आयोजन हुआ, जिसमें पीएमएलए के चेयरपर्सन और मद्रास हाई कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश मुनीश्वरनाथ भंडारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुनि सुधाकर जी ने महावीर के अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए कहा कि यह साध्य और साधन की शुद्धि की प्रेरणा देता है और अर्जन के साथ विसर्जन पर भी बल देता है। मुख्य अतिथि मुनीश्वरनाथ भंडारी ने भगवान महावीर के विचारों को आज के समय में भी प्रासंगिक बताया और इनके व्यापक प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर रायपुर के कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कलश नाहर ने किया।

पंचम रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत। तेरापंथ युवक परिषद सूरत द्वारा पांचवा रक्तदान शिविर, संयम विहार, चातुर्मास प्रवास स्थल, वेसु-सूरत में आयोजित किया गया। इस रक्तदान शिविर में MBDD आयाम के राष्ट्रीय प्रभारी हितेश भांडिया की विशेष उपस्थिति रही। सिविल हॉस्पिटल ब्लड बैंक की सहभागिता से रक्तदान शिविर में कुल 34 रक्त यूनिट एकत्रित हुए।

सामूहिक संवाद से समाज में हो जागृति

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में 78वें स्वतंत्रता दिवस की रात्रि में अभिनव टॉक शो का सफल आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा किया गया। टॉक शो का मुख्य विषय था धर्म, युवा और देशप्रेम। टॉक शो के पैनल में युवक रत्न रतन दुगड़ व डॉक्टर तारा दुगड़ एवं मंच संचालक महानगर पत्र के संपादक प्रकाश चंडालिया थे।

संवाद के मुख्य चर्चनीय विषय-युवा धर्म की और कैसे आकर्षित हो, युवा हमारी श्रेष्ठ संस्कृति से विमुख क्यों हो रहे हैं?, समाज में व्यसन, फैशन, प्री वेडिंग, डिजिटल समस्या, आदि थे। विषयों पर संभागियों ने खुलकर अपने विचार

व्यक्त किए। संवाद क्रम की संपन्नता के पश्चात आशीर्वचन प्रदान करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- जीवन की हर समस्या का समाधान देने वाला तत्व धर्म है। धर्म आत्मशुद्धि का उपाय है। धर्म अन्तःचेतना को जगाने वाला है।

धर्म के तीन अंग हैं अध्यात्म, नैतिकता, उपासना। धर्म स्वास्थ्य, समाधि, शांति व सुख देने वाला है। युवा अपनी संस्कृति के प्रति आस्था रखें। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जैनत्व झलकना चाहिए। पैनल में उपस्थित रतन दुगड़ ने कहा- युवा धर्म से विमुख नहीं हैं। उसे कल्चर, वरशिप के साथ फिलोसॉफी भी समझना होगा तभी वह धर्म से जुड़ सकेगा। डॉक्टर तारा दुगड़ ने कहा - इंसान का मूल आधार है संस्कार, संस्कार निर्माण में सबसे पहले

रोल है अभिभावकों का। बच्चे उपदेशों से नहीं आचरणों से सीखते हैं। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा टॉक शो का आयोजन सामूहिक संवाद के माध्यम से समाज में जागृति पैदा करने का प्रयास मात्र है। सामाजिक एवं धार्मिक मुद्दों पर सामूहिक चर्चा से एक नया संदेश समाज को मिले यह अपेक्षा है।

मुनि कुणाल कुमार जी द्वारा सुमधुर गीत के संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष गगनदीप बैद ने दिया। तेयुप सदस्यों व भजन मंडली ने देशभक्ति गीतों का संगान किया। आभार ज्ञान तेयुप सहमंत्री सुनीत नाहटा ने किया। टॉक शो का कुशल संचालन प्रकाश चंडालिया और मंत्री अमित बेगवानी ने किया।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

गंगाशहर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा चित्त समाधि शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजल प्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की मंगल शुरुआत मंगलाचरण से मंडल की बहनों द्वारा की गई। अध्यक्षीय वक्तव्य में संजू लालाणी ने सभी का स्वागत किया। सभी ने मिलकर स्वतंत्रता दिवस पर झंडा रोहण कर शुभकामनाएं प्रेषित की। साध्वी कृतार्थप्रभा जी ने मंत्र जाप

करवाया। साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने मंगल भावनाओं के बारे में विस्तार से बताते हुए प्रतिदिन 9 बार भाव सहित उच्चारण करने की प्रेरणा दी। साध्वी चरितार्थ प्रभा जी ने जिज्ञासाओं का समाधान देते हुए अपना वक्तव्य प्रदान किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजेंद्र सेठिया ने बताया कि छोटे-छोटे नियमों को अपना कर शारीरिक मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य की प्राप्ति कर चित्त समाधि में रह सकते हैं। जीवन का आनंद प्रवृत्ति में नहीं निवृत्ति में है। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक धीरेंद्र बोथरा द्वारा प्रेक्षाध्यान के प्रयोग

के साथ विभिन्न योगिक क्रियाएं एवं मैत्री की अनुप्रेक्षा करवाई गई। रेखा चोरडिया द्वारा बहुत ही रोचक प्रतियोगिता के माध्यम से पंचपन में बचपन की अनुभूति करवाई गई। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राजेंद्र सेठिया, विशेष सहयोगी शारदा डागा एवं मधु सेठिया एवं धीरेंद्र बोथरा का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम संयोजक सुनीता डोसी और अंजू बोथरा ने बताया कि कार्यक्रम में 55 वर्ष से अधिक के लगभग 225 भाई बहनों ने अति उत्साह से भाग लिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री मीनाक्षी आंचलिया द्वारा किया गया।

प्रेरणा कार्यशाला का आयोजन

पालघर।

तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में साध्वी पीयूषप्रभा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में पालघर जिला स्तरीय प्रेरणा कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में पालघर जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आई कन्याओं का स्वागत थम प्रिंटिंग के माध्यम से किया गया। अभातेममं कोषाध्यक्ष तरुणा बोहरा, कार्यकारिणी सदस्य संगीता बाफना, महिला मंडल अध्यक्ष संगीता चपलोट और मंत्री रंजना तलेसरा ने प्रेरणा वृक्ष का उद्घाटन किया। साध्वी डॉ. पीयूषप्रभा

जी ने 'आधुनिक संस्कृति: हमारे संस्कार' विषय पर बोलते हुए कन्याओं को सही दिशा में प्रेरित करने की आवश्यकता पर जोर दिया और टाइम मैनेजमेंट की महत्ता बताई। तरुणा बोहरा ने 'इग्नाइट योर एग्जाम स्पिरिट' पर एक प्रेरणादायक वक्तव्य दिया, जबकि साध्वी भावनाश्री जी ने पेंसिल से प्रेरणा लेने की बात की। साध्वी दीप्तिशशा जी ने ध्यान का प्रयोग करवाया और एकाग्रता बढ़ाने के विभिन्न उपाय बताए।

दूसरे सत्र में सूरत से आई आर्टिस्ट रिची जैन ने रंगों के माध्यम से कन्याओं की प्रतिभा को उजागर किया। पालघर,

नालासोपारा, विरार, सफाला, मनोर, बोईसर और डहाणू की कन्याओं के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ, जिसमें पालघर की भाग्यश्री बाफना और नालासोपारा की कशिश एवं ब्लू ग्रुप विजेता रहे। कार्यशाला के प्रायोजकों और आर्टिस्ट रिची जैन का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी दीप्तिशशा जी और निष्ठा श्रीश्रीमाल ने किया, जबकि आभार अनिशा सिंघवी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा अध्यक्ष चतुर तलेसरा, मंत्री दिनेश राठौड़ और महिला मंडल की टीम का विशेष योगदान रहा।



प्रवृत्ति से निवृत्ति की दिशा में गतिमान होने का सुपथ है निर्ग्रन्थ दर्शन

चिकमंगलूरु।

भारतवर्ष में निर्ग्रन्थ दर्शन अति प्राचीन है। यह दर्शन जीवन का महान आधार है। इसका दर्शन और चिंतन सदा समय सापेक्ष रहा है। निर्ग्रन्थ दर्शन का अस्तित्व मध्य काल में कुछ क्षत-विक्षत सा रहा पर वर्तमान युग के लिये यह दर्शन महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बना हुआ है। निर्ग्रन्थ दर्शन के उन मौलिक तथ्यों को वर्तमान युग के सन्दर्भ में प्रकट करना आवश्यक समझा गया।

इसी परिप्रेक्ष्य में चिकमंगलूरु में चातुर्मास कर रहे युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में निर्ग्रन्थ दर्शन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, चिकमंगलूरु द्वारा किया गया। निर्ग्रन्थ दर्शन कार्यशाला के मुख्य अभिभाषक मुनि जयेशकुमार जी ने अतीत, वर्तमान और भविष्य से जुड़े अनेक विषयों पर प्रस्तुति देकर निर्ग्रन्थ दर्शन की महत्ता को प्रकट किया। उन्होंने कार्यशाला में एक साथ सब सधे, 24 तीर्थंकर कैसे एक? अंधश्रद्धा क्यों पनपती है?, क्या है जैन धर्म में

चमत्कार को नमस्कार?, लक्ष्मी बड़ी या सरस्वती?, पार्श्व की महिमा क्यों सबसे न्यारी?, उवसगगहर स्तोत्र का अचिंत्य माहात्म्य, नमस्कार महामंत्र-उद्भव विकास, नमस्कार महामंत्र का प्रभाव, यह दुनिया एक अजब माया, जैन संस्कार सुखी संसार, क्या है जातिवाद?, जैन संस्कार विधि, अमूल्य निधि, संघे शक्ति: कलौ युगे, कैसा हो साधर्मिक सहकार?, महावीर का स्वास्थ्य विज्ञान, महावीर का आहार विज्ञान, क्षण की कीमत आंको, धर्म जये पापे क्षय - भले भलो बुरे बुरो, कैसे हो जीवन में अहिंसा का अवतरण?, क्यों जरूरी अपरिग्रही बनना?, कैसे हो अनाग्रही चेतना का जागरण?, अज्ञान परमं कष्ट, मैं कौन हूँ?, मुनि जयेश की कहानी अपनी जुबानी, मुनि मोहजीत की वैराग्य यात्रा, मुनि भव्य कुमार के अंत: उद्गार, श्रोताओं के अनुभव स्वर जैसे विषयों को अपने संभाषण का विषय बनाया। कार्यशाला के अंतिम दिन आयोजित मंथन समारोह में मुनि जयेशकुमारजी ने कहा निर्ग्रन्थ शब्द जैन धर्म का पर्यायवाची होने के साथ ही हमें अपने शरीर, मन, आत्मा की

ग्रंथियों से मुक्त होने की प्रेरणा प्रदान करता है। सभी प्रतिभागी कार्यशाला में प्राप्त बोधि से भीतर की ग्रंथियों को परिष्कृत करने का प्रयास करें। उन्होंने सभी विषयों के कुछ हार्दपूर्ण बिंदुओं की प्रस्तुति दे। उपस्थित प्रतिभागियों को विशिष्ट ज्ञान मंथन करवाया। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा निर्ग्रन्थ दर्शन भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने का अन्तः दर्शन है। यह दर्शन प्रवृत्ति से निवृत्ति की दिशा में गतिमान होने का सुपथ है। इस पथ पर चलने को लिए निर्ग्रन्थ दर्शन को समझना जरूरी है। यह दर्शन ही हमारी भाव धारा को प्रकृष्ट बना मोक्ष गति की राह को प्रशस्त बनाता है।

मुनि भव्यकुमार जी ने कार्यशाला के उद्देश्य एवं परिणाम पर विशद विचार प्रस्तुत किए। श्रोताओं में ताराचंद बरलोटा, नितेश नाहर, मदन गादिया, सुरेन्द्र गोखरु, भरत बरलोटा, दीक्षा डोसी, लाजवंत गादिया ने अपने अनुभूति स्वरों को प्रकट किया। कार्यशाला के व्यवस्थापन में तेयुप अध्यक्ष जयेश गादिया, मंत्री राकेश कावडिया का विशेष योगदान रहा।

'स्परिचुअल फ्रीडम-लिबरेशन विदिन' कार्यशाला का आयोजन

मण्डिया।

साध्वी संयमलता जी ठाणा ४ के सान्निध्य में 'स्परिचुअल फ्रीडम-लिबरेशन विदिन' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राष्ट्र और समाज में मूल्यों के पुनर्स्थापन की पुकार करने वाली स्वतंत्रता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए साध्वी संयमलता जी ने कहा- आज का इंसान अर्थवाद, पदार्थवाद, और स्वार्थवाद की परतंत्रता में जकड़ा हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्त हुए 77 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन स्वयं को स्वतंत्र बनाने के लिए हम अपनी इच्छाओं के दासत्व को जितना कम करेंगे, उतना ही साधुत्व का ग्राफ ऊंचा उठेगा।

साध्वी मनीषाप्रभा जी ने बताया कि असली आजादी के लिए कर्मरूपी बंधनों की बेड़ियों को तोड़ना जरूरी है। निगोद से लेकर पंचेन्द्रिय बनने तक, कितने-कर्मों को तोड़ना पड़ता है। ये कर्म सही रूप में टूटेंगे तभी हम स्वतंत्र बनेंगे। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान किया।

संक्षिप्त खबर

संपूर्ण स्वास्थ्य प्रोफाइल जांच शिविर

राजराजेश्वरीनगर। 78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, डेंटल एवं आई केयर में कमलेश भरत डूंगरवाल परिवार (मार्गदर्शन फाउंडेशन) के सहयोग से संपूर्ण स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर 'तुलसी हेल्थी लाइफ' जिसमें 44 पेरामीटर्स की जांच एटीडीसी के मूल्य से 78% छूट पर की गई। अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। इस शिविर में स्वास्थ्य जांच से लगभग 187 लोग लाभान्वित हुए। इस अवसर पर एटीडीसी राष्ट्रीय सह प्रभारी आलोक छाजेड़ की उपस्थिति रही। शिविर को सफल बनाने में मंत्री सुपाश पटावरी, तेयुप पदाधिकारीगण, परामर्शक गण, कार्यसमिति सदस्य, किशोर मंडल एवं एटीडीसी टीम का संपूर्ण सहयोग रहा।

आपातकाल में जीवन रक्षा का पाया प्रशिक्षण

अमर नगर, जोधपुर। अभातेयुप निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद् सरदारपुरा जोधपुर द्वारा आयोजित तेरापंथ टास्क फोर्स का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से हुआ। इस आयोजन में जीवन बचाने के कौशल के बारे में बताया गया। आयोजन में साध्वी जिनबालाजी ने कहा कि इस जानकारी से हमें बड़ी से बड़ी दुर्घटना से बचने में सहायता मिलेगी। संयोजक धीरज बैंगानी, रोहित जीरावाला एवं अनंत मेहता ने कार्यक्रम की संयोजना की। आभार ज्ञान कैलाश जैन ने किया।

सम्यक दर्शन कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बेंगलूरु। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् निर्देशित सम्यक दर्शन कार्यशाला का सफल आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलूरु (गांधीनगर) ने तेरापंथ सभा भवन गांधीनगर में साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में आयोजित किया। साध्वी श्री ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित पुस्तक पुरुषोत्तम महावीर की विस्तृत विवेचना करते हुए भगवान महावीर के जीवन में ध्यान, तप, अहिंसा, अनेकांतवाद, स्यादवाद का महत्व और उनके सिद्धांतों का विवेचन किया। साध्वीश्री ने आगे कहा हर श्रावक-श्राविका को महावीर का जीवन केवल पढ़ना ही नहीं अपितु महावीर के सिद्धांतों को समझना है, उनका अनुसरण करना है, उनको जीना है और एक दिन महावीर बनना है। कार्यशाला में लगभग 80 लोगों ने भाग लिया। कार्यशाला का सफल संयोजन विवेक मरोठी ने किया।

उवसगगहर स्तोत्र का सामूहिक जप अनुष्ठान

नाथद्वारा।

महातपस्वी युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी मंजूयशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में संकट निवारक, विघ्न विनाशक, शांति प्रदायक 'उवसगगहर स्तोत्र' का सामूहिक जप अनुष्ठान तेरापंथ भवन नाथद्वारा में हुआ। इसमें स्वास्तिक आकार में पति-पत्नी के जोड़े और कुर्सी पर बैठने वाले दंपति तथा अन्य भाई-बहन, कुल 82 जोड़े संभागी बने। इस

अनुष्ठान में साध्वी वृंद और संभागी जोड़ों ने एक लय, एक स्वर के साथ बीज मंत्र का 108 बार एवं उवसगगहर स्तोत्र का 27 बार तन्मयता व एकाग्रता के साथ जप किया। साध्वीश्री ने अनुष्ठान से पूर्व इसका विशेष महत्व बताते हुए इसकी उपयोगिता, विधि, लाभ आदि को विस्तार से बताते हुए कहा कि उपसर्गहर स्तोत्र की रचना श्रुत केवली प्रभावी आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने जैन शासन पर आए संकट के समय की। इस स्तोत्र में जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान

पार्श्वनाथ की स्तुति में रचा गया। इसमें अद्भुत शक्ति बीज निहित है। इसको तन्मयता पूर्वक, श्रद्धा व भक्ति पूर्वक करने से आंतरिक ऊर्जा द्वारा साधक अपना अभीष्ट कार्य पूर्ण सफलता पूर्वक सिद्ध कर लेता है। साध्वीश्री ने अनेक प्रेरणादाई घटनाओं द्वारा इस स्तोत्र की उपयोगिता को समझाने का प्रयास किया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष प्रियांक तलेसरा ने अनुष्ठान में संभागी सभी भाई-बहनों एवं पूरे जैन समाज के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

जयाचार्य मर्यादा, अनुशासन, नवीनता के पोषक थे

नोखा।

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य भिक्षु के बाद चौथे आचार्य जयाचार्य प्रारंभ से ही विलक्षणता लिए थे। वह प्रज्ञावान व मर्यादा, अनुशासन, नवीनता के पोषक थे। उनकी जोड़ कला बेजोड़

थी। अनेक प्रसंगों में देव सेवा के प्रसंग प्रेरक हैं। चौबीसी आज भी मधुरता लिए विघ्न विनाशक है। ये उद्गार 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती जी ने जयाचार्य के 144 वां महाप्रयाण दिवस पर कहे। मंगलाचरण युवती मंडल की बहनों ने किया। साध्वी कुसुमप्रभाजी, साध्वी

प्रभातप्रभाजी, उपासक अनुराग बैद, सुनील बैद, इन्दरचन्द बैद, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी, महावीर नाहटा ने श्रद्धांजलि भाव अर्पित किए। तेयुप अध्यक्ष निर्मल चौपड़ा ने भाग्य चक्र प्रश्नोत्तरी के बारे में जानकारी दी। कुशल संचालन साध्वी प्रभातप्रभाजी ने किया।

संक्षिप्त खबर

चित्त समाधि शिविर का शुभारंभ

अमराईवाडी। अभातेममें के तत्वावधान में चित्त समाधि शिविर का आयोजन साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में अमराईवाडी सिंघवी भवन में किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने सभी का स्वागत किया। साध्वी काव्यलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि चित्त समाधि जीवन की उपलब्धि है इसके लिए अंतःकरण को प्रसन्न रखें, निर्मलता, उज्ज्वलता को जीवन का कवच बनाएं। वही व्यक्ति चित्त को समाधि में रख सकता है जो सहना सीखे, रहना सीखे, हंसना सीखे, साथ ही परिवार में सामंजस्य एवं मैत्री का प्रयोग करे। अल्पभाषिता के द्वारा अपनी उपयोगिता परिवार में सिद्ध करें। साध्वी ज्योतिशशा जी ने मंगल भावना की सुंदर व्याख्या कर उसे जीवन का सहचर बनाने की प्रेरणा दी। साध्वी सुरभिप्रभा जी ने महाप्राण ध्वनि एवं जप का प्रयोग करवाया। साध्वी सुरभिप्रभा जी व साध्वी राहतप्रभा जी ने मधुर गीत का संगान कर परिषद को भाव विभोर कर दिया।

भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

बीदासर। आध्यात्मिक शक्तियों के जागरण हेतु समाधि केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी द्वारा बीजमंत्रों सहित भक्तामर अनुष्ठान विशेष रूप से स्वस्तिक आकार में बीदासर समाधि केन्द्र तेरापंथ भवन में करवाया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ में साध्वी कार्तिकयशा जी ने भक्तामर-स्तोत्र की महिमा को उजागर किया। इस अवसर पर साध्वी श्री ने कहा- 'भक्तामर स्तोत्र जैन परम्परा में सर्वमान्य स्तोत्र है। श्वेताम्बर और दिग्म्बर दोनों इसका पाठ बड़ी श्रद्धा से करते हैं। भक्तामर स्तोत्र मंत्रगर्भित स्तोत्र है। इसमें मंत्रों के अक्षरों की ऐसी संयोजना की गई है कि स्तोत्र-जाप से सारा काम अपने आप हो जाता है। यह चमत्कार केवल शब्दों के उच्चारण मात्र से नहीं, शब्दों के साथ भावना के योग मिलने से होता है। लगभग 125 की संख्या में सभा, महिला मंडल, कन्या मण्डल, युवक परिषद् एवं श्रावक-श्राविका समाज ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी। अन्त में साध्वी कार्तिकयशा जी ने चातुर्मासिक आगामी आध्यात्मिक योजना एवं कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं पचरंगी तप की प्रेरणा प्रदान की।

रक्तदान शिविर का आयोजन

उधना। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अंतर्गत मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत वर्ष 2024-25 कार्यकाल का पहला रक्तदान शिविर सांस्कृतिक रक्षा समिति माधव गौशाला, उधना के साथ मिलकर तेरापंथ युवक परिषद् उधना ने सहयोगी संस्था के रूप में सफलतापूर्वक संपन्न किया। इस शिविर में कुल 583 ब्लड यूनिट एकत्रित किए गए। इस आयोजन में तेयुप उधना की ओर से प्रभारी राकेश डांगी, सह-प्रभारी मनोज डागा तथा अंकित पितलिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिविर में किशोर मंडल की संपूर्ण टीम ने भी अपना पूर्ण रूप से योगदान दिया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सूरत के संघचालक सुधाकर मास्टर, उधना के शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी एवं सरगम सलाहकार सुनील चण्डालिया भी इस कैम्प में उपस्थित थे।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट का आयोजन

हावड़ा। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कांटेस्ट 2024 का तृतीय आयोजन अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा हावड़ा शिक्षा सदन बॉयज में किया गया। कार्यक्रम में चित्रकला, भाषण, कविता, निबंध एवं गायन की प्रतियोगिता आयोजित हुई। हावड़ा शिक्षा सदन बॉयज के लगभग 53 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह का भव्य कार्यक्रम आयोजित

नाथद्वारा।

महातपस्वी युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी मंजू यशा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ सभा की ओर मासखमण तप अभिनंदन समारोह का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी ने नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुआ।

साध्वीश्री ने मासखमण की तपस्या करने वाले गणपतलाल मेहता की हिम्मत की प्रशंसा करते हुए अपने उद्बोधन में कहा- भगवान महावीर से गणधर गौतम ने प्रश्न किया- भंते!

तपस्या से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर मिला तपस्या से पूर्व संचित कर्मों को दूर किया जा सकता है। सचमुच तप वह है जो आत्मा को पवित्र बनाता है, साधना का मार्ग प्रशस्त करता है, सहिष्णुता की शक्ति का विकास करता है। तप वह है जो आत्मा के विजातीय तत्वों को दूर करता है। उन्होंने आगे कहा- तप करने करने से शारीरिक बल के साथ अटूट संकल्प, धैर्यता, इंद्रिय संयम मनोबल, कषाय विसर्जन आदि गुणों को उजागर करते हैं।

इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभा जी, साध्वी इंदुप्रभा जी एवं साध्वी मानसप्रभा

जी ने गीत, भाषण के द्वारा तपस्वी के तप की अनुमोदना की। सकल जैन समाज के अध्यक्ष ईश्वरचंद्र समोता, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष विश्वजीत कर्णावट, तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री हितेश कोठारी, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा मंजू पोरवाल आदि अनेक पदाधिकारियों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों आदि ने तपस्वी के प्रति अनुमोदना की भावना व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मधुर गीत का संगान किया गया। पीयूष कोठारी व कनक समोता द्वारा एक लघु परिसंवाद प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिन्मयप्रभा जी द्वारा किया गया।

व्रत से व्यक्ति उज्ज्वलता को प्राप्त होता है

साउथ हावड़ा।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन प्रेक्षा विहार में तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण हावड़ा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उद्बोधन देते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा भारतीय संस्कृति व्रत प्रधान संस्कृति है। व्रत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। व्रत जीवन का सुरक्षा कवच है।

व्रत जीवन की बुनियाद है। स्वयं से स्वयं को जोड़ने की एक दिव्य प्रेरणा है। संयम में प्रवृत्त होने के लिए व्रत की उपयोगिता उपादेय है। भगवान महावीर ने दो प्रकार का धर्म बताया - अणुगार धर्म व आगार धर्म। भगवान ने श्रावक के लिए 12 व्रतों का विधान किया है। उसे आगार धर्म कहा है। एक गृहस्थ भी बारह व्रतों के माध्यम से धर्म की आराधना कर सकता है, वह सुगति का अधिकारी बन सकता है। श्रावक को व्रत के आधार पर तीर्थ में लिया गया है।

मुनिश्री ने आगे कहा- व्रत का अर्थ है- इच्छा का नियंत्रण। व्यक्ति

यदि साधु नहीं बन सकता है तो कम से कम श्रावक के बारह व्रत स्वीकार करने चाहिए। व्रत धारण करने से व्यक्ति हल्का हो जाता है, मन में समाधि रहती है, सुख और शांति का संचार होता है। उपभोक्तावादी संस्कृति में व्रतों में अनुष्ठान रखना अपने आप में श्रेष्ठ है। व्रत से व्यक्ति उज्ज्वलता को प्राप्त होता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणालकुमार जी के मंगल संगान से हुआ। स्वागत भाषण उपाध्यक्ष पारस बरड़िया ने व आभार सहमंत्री सुनील नाहटा ने किया। संचालन मुनि कुणालकुमार जी ने किया।

सांसों की सीमा निश्चित है, लेकिन इच्छाओं का कोई अंत नहीं

पेटलावद।

इंद्रियों और अहंकार पर नियंत्रण के अभाव में दुर्घटनाएं भी घटित हो जाती हैं। सांसों की सीमा निश्चित है, लेकिन इच्छाओं का कोई अंत नहीं। संतोष के बिना शांति को प्राप्त नहीं किया जा सकता। तपस्या रूपी वृक्ष की जड़ संतोष है, जिसके पास तपस्या रूपी कल्पवृक्ष होता है उसकी सारी कामनाएं पूरी हो जाती हैं। उसे सब कुछ मिल सकता है।

उक्त आशय के उद्गार साध्वी उर्मिलाकुमारीजी ने पूजा प्रमोद मेहता के मासखमण (31 उपवास) और विमलादेवी अमृतलाल वोरा के धर्मचक्र की तपस्या की संपन्नता पर तेरापंथ समाज द्वारा आयोजित तप अभिनंदन कार्यक्रम में तेरापंथ भवन में व्यक्त किए।

आपने कहा महान जैनाचार्य आचार्य श्री सोमप्रभसूरिजी के संस्कृत श्लोक का उच्चारण करते हुए कहा कि तपस्या रूपी वृक्ष की जड़ संतोष है। इसका तना उपशम (क्रोध, मान, माया व लोभ को शांत रखना) है। प्रासंगिक रूप से आपने कहा कि उपशम के अभाव में आज का व्यक्ति लगातार दुखी बनता जा रहा है।

तप रूपी वृक्ष इसकी शाखाएं हैं इंद्रिय विजय तथा अपने प्रसन्न रूप से कहा धन की संपदा की अपेक्षा से नियम की संपदा श्रेष्ठ होती है जिसके पास संयम रूपी संपदा होती है वह शांति को उपलब्ध हो सकता है।

आपने कहा कि दोनों बहनों ने साहस और मनोबल का परिचय देकर तपस्या को संपन्न किया है। साध्वी मृदुलयशा

जी ने साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन कर कहा कि तीर्थंकर वाणी में कहा गया है कि धर्म उक्तृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप इसके रूप हैं। देवता भी उसे नमस्कार करते हैं जिसका मन सदैव धर्म में रमा रहता है।

इस अवसर पर साध्वी ऋतुयशाजी, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मनोज गादिया, कन्या मंडल, मेहता परिवार, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता भंडारी, युवक परिषद अध्यक्ष अभिषेक चोपडा, किशोर मंडल संयोजक तन्मय गादिया, जय ट्रस्ट व तुलसी बाल विकास समिति अध्यक्ष पारस गादिया, तेरापंथी महासभा के संघ समन्वयक दिलीप भंडारी अपने भावों द्वारा तपस्या की अनुमोदना की। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री राजेश वोरा ने किया।

संक्षिप्त खबर

प्रेक्षा ध्यान, योग और अनुशासन की कार्यशाला का आयोजन

पश्चिम, दिल्ली। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडली द्वारा निर्देशित दिल्ली (पश्चिम) महिला मण्डल द्वारा प्रेक्षा ध्यान, योग और अनुशासन की कार्यशाला सर्वोदय विद्यालय, मान सरोवर गार्डन, नई दिल्ली में रखी गयी। कार्यशाला का आरम्भ महाप्राण ध्वनि के प्रयोग से किया गया। अध्यक्ष रिटा चोरडिया ने बच्चों का उत्साह वर्धन करते हुए जीवन में ध्यान, योग व अनुशासन अपनाने की प्रेरणा दी। मनीषा जैन ने प्रेक्षा ध्यान के द्वारा एकाग्रचित होने के प्रयोग करवाए गए। सहमंत्री राजुल मनोत ने अनुशासन पर एक रोचक कहानी सुनाई। मंत्री मीना डूंगरवाल ने प्रेरक प्रसंग सुनाकर उन्हें सकारात्मक जीवन शैली की दिशा में बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यशाला में लगभग 450 बच्चों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की संयोजिका राजुल मनोत व मनीषा जैन थीं। अभार ज्ञापन मंत्री मीना डूंगरवाल ने किया।

भक्तामर स्तोत्र अनुष्ठान का आयोजन

सरदारशहर। डॉ. साध्वी शुभप्रभाजी के सान्निध्य में भक्तामर स्तोत्र का अनुष्ठान आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने कहा- हम सब साधक हैं। साधना के चार मार्ग हैं- ज्ञान, भक्ति, कर्म, संन्यास। उत्तराध्ययन सूत्र में ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप से भी आत्म कल्याण की चर्चा की गई है। भक्तामर आचार्य मानतुंग द्वारा रचित भक्तिपूरित रचना है। यह स्तुति बसन्ततिलका छन्द में लिखी गई है। भक्ति के प्राबल्य से चंदना ने प्रभु महावीर को, शोभजी ने आचार्य भिक्षु के दर्शन प्राप्त कर लिए। प्रारम्भ में साध्वीश्री जी द्वारा ब्रजपंजर स्तोत्र, लोगस्स पाठ, ऊं ऋषभाय नमः मंत्र का 9 बार जप एवं पूरे भक्तामर का सामूहिक उच्चारण करवाया गया। साध्वीश्री जी ने प्रसंगवश आचार्य मानतुंग के जीवन वृत्त को भी संक्षेप में बताया। डॉ. साधी कान्तयशा जी ने ऋषभाय नमः गीत का संगान किया।

चित्त समाधि शिविर का आयोजन

जसोल। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा मुनि यशवंतकुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य में 'चित्त समाधि शिविर' का आयोजन किया गया। मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण से शिविर का शुभारम्भ किया गया। उपासिका मोहनी देवी संकलेचा ने मंगल भावना के संगान के साथ उनके अर्थ भी बताए। रक्षा सालेचा ने शारीरिक, मानसिक तनाव को कम करने और मन शांत करने के लिए आसन, प्राणायाम के प्रयोग बताए। नीतु सालेचा ने प्रेक्षा ध्यान, क्षमा और मैत्री की अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया। चंदा चोपड़ा ने घर में शांति का वातावरण बनाने के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। मुनि यशवंत कुमार जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें अपनी वजह से किसी को दुख हो, ऐसा काम करने से बचना चाहिए। कर्म किसी को नहीं छोड़ता है। बाहर रहकर भीतर की साधना में लगाने चाहिए। हर वस्तु की सीमा करनी चाहिए ताकि हमारे व्रतों में बढ़ोतरी हो सके। अध्यक्ष कंचन देवी ढेलडिया ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष जयश्री सालेचा ने किया।

जैन विद्या परीक्षा के लिए मिला तृतीय स्थान

कांकरिया मणिनगर। समण संस्कृति संकाय का 24वां राष्ट्रीय अधिवेशन सूरत में आयोजित हुआ। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कांकरिया मणिनगर को जैन विद्या परीक्षा 2023 के लिए पूरे भारत वर्ष में तृतीय स्थान के लिए युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय व जैन विश्व भारती लाडनू के पदाधिकारियों के द्वारा सम्मानित किया गया।

सुसंस्कारों की अभिनव शाला है ज्ञानशाला

नाथद्वारा।

साध्वी मंजूयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा की ओर से केंद्र के निर्देशानुसार ज्ञान शाला दिवस बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा अर्हम्-अर्हम् की वंदना फले इस मधुर गीत द्वारा हुआ।

ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका ने ज्ञानशाला परिवार की ओर से सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। साध्वीश्री ने अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि जीवन की तीन अवस्थाएं हैं - बाल्यावस्था, यौवन अवस्था, वृद्धावस्था। जीवन निर्माण की शुरुआत बाल्यावस्था से होती है।

माता-पिता आदि अभिभावक गण एवं स्कूल में गुरुजनों से संस्कार एवं शिक्षा प्राप्त होती है। ज्ञानशाला बच्चों में अच्छे संस्कारों के जागरण की शाला है।

उन्होंने आगे कहा कि बच्चे का जीवन कोरे कागज के समान होता है। बच्चों के जीवन उपवन को सरसब्ज बनाने के लिए अच्छे संस्कारों की खाद से अच्छा सिंचन मिलता है तभी भावी पीढ़ी का निर्माण होता है।

साध्वीश्री जी ने उदाहरणों के माध्यम से बाल परिषद को पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए एक सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में 51 बच्चे एवं 17 प्रशिक्षिकाएं उपस्थित थीं। इस अवसर पर साध्वी चिन्मयप्रभा जी, साध्वी

इंदुप्रभाजी एवं साध्वी मानसप्रभाजी ने गीत एवं भाषण द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ के सभा अध्यक्ष विश्वजीत कर्णावट, सकल जैन समाज के अध्यक्ष ईश्वर सिंह सामोता, ज्ञानार्थी नमन बापना, प्रशिक्षिकाओं ने गीत व भाषण द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा 'ज्ञानशाला योजना कैसे? क्यों? किस लिए?' की महत्ता को एक सुंदर परिसंवाद द्वारा प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला दिवस कार्यक्रम में लाल डागलिया, गणेश लाल बाफना एवं भगवती लाल चपलोत का पूरा-पूरा आर्थिक सहयोग रहा।

रंजना कच्छारा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका सीमा डागलिया ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

लोकोत्तम महावीर के...

आगम सूत्रों में निर्जरा के बारह प्रकार बताए गए हैं। इनमें प्रारंभिक चार प्रकार आहार के साथ जुड़े हुए हैं। इनके अतिरिक्त भी जैन दर्शन के अंतर्गत आहार के बारे में जगह-जगह पर दिशा निर्देश मिलते हैं। भगवान महावीर ने मुनि मेघकुमार को निर्देश दिया- यतना पूर्वक खाओ, संयम पूर्वक खाओ। यह निर्देश सबके लिए अपने जीवन में अपनाने योग्य है। सब स्वस्थ बनना चाहते हैं, दीर्घायु बनना चाहते हैं, चिर युवा बनना चाहते हैं, इसके लिए सबको आहार का संयम करना होगा। हमें हित और मित आहार पर ध्यान देना चाहिए।

पर्युषण महापर्व के महत्त्व को उजागर करते हुए मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी ने कहा कि तीन तरह के व्यक्ति होते हैं- सांसारिक राग-द्वेष में उलझने वाले, सांसारिक भोग विलास में रहते हुए भी अस्तित्व को थोड़ा सुरक्षित रखने वाले, सांसारिक प्रलोभनों में अपने आप को साधना में स्थिर रखने वाले। पर्युषण का अष्टान्हिक महाशिविर हमें तीसरे प्रकार का व्यक्ति बनने की प्रेरणा देने वाला है। हम भीतर की आंख से अपने आप को निहारने का प्रयास करें।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने इस संदर्भ में गीत का संगान किया। साध्वी रश्मिप्रभाजी ने खाद्य संयम दिवस के संदर्भ में गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पृष्ठ 2 का शेष

भिक्षु सिद्धांतों के...

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने कहा कि समुद्र जैसी बुद्धि अथाह तत्व को ग्रहण करती है। श्रीमद् जयाचार्य के लिए रज्जु पुरुषर शब्द का प्रयोग हुआ है। उनकी बुद्धि समुद्र के समान गहरी और तत्व ग्रहण करने वाली थी।

बाल्यावस्था में ही उनकी बुद्धि प्रखर थी। रहोन्हार वीरवान के होत चिकने पातर कहावत उन पर सटीक बैठती है। उन्होंने अपनी तेजस्विता से तेरापंथ धर्म संघ को तेजस्वी बनाया। उनमें तार्किक बुद्धि के साथ-साथ उत्कृष्ट विनय भाव भी था। उनकी मेधा विलक्षण थी।

ठाणे में पूर्व सांसद डॉ. संजीव गणेश नाईक, राजस्थान पत्रिका के संपादक शैलेंद्र तिवारी, टेक्सटाइल युवा ब्रिगेड के अध्यक्ष ललित शर्मा परम पूज्य की सन्निधि में पहुंचे। डॉ. संजीव नाईक ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

स्वास्थ्य विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

कादिवली (मुंबई)।

साध्वीश्री डॉ मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में, तेरापंथ भवन कादिवली में स्वास्थ्य विज्ञान कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला में उपस्थित सभागियों को सम्बोधित करते हुए साध्वी श्री ने कहा- स्वस्थता की पहचान है जो स्व में स्थित रहे।

आज हालात यह है कि व्यक्ति प्रकृति से दूर होता जा रहा है। इसलिए वह स्वस्थ अनुभव नहीं करता। विजातीय

तत्वों के घिरा होने के कारण शुद्ध हवा, पानी नहीं मिल रहा। भारत की संस्कृति में स्वास्थ्य की पूरी प्रक्रिया है। आसन, प्राणायाम आदि नियमित स्वस्थता प्रदान करते हैं। भारत की सम्पूर्ण पद्धतियां सम्पूर्ण रूप से अध्यात्म पर निर्भर है। साध्वी श्री ने कहा- तपस्या को परम औषध कहा गया है। तप की आराधना करने वाला अनेक रोगों से मुक्त हो सकता है। इन्द्रिय संयम की साधना हर व्यक्ति को करनी चाहिए। जीवन का प्रथम सूत्र है निरोगी काया।

इस अवसर पर अहमदाबाद से समागत प्राकृतिक चिकित्सक धीरेन शरीन का सारगर्भित वक्तव्य हुआ।

उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा- स्वस्थ रहने के लिए अपने खान-पान पर विशेष ध्यान होगा। शरीर की स्वस्थता, मन की स्वस्थता और आत्मा की स्वस्थता के लिए निरन्तर प्रयास अपेक्षित है। तामसिक और राजसिक आहार से जितना हो सके बचना चाहिए, सात्विक आहार का प्रयोग स्वस्थता के लिए आवश्यक है।

वर्ष 2023 का अणुव्रत पुरस्कार प्रदत्त

मुंबई।

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा दिये जाने वाले प्रतिष्ठित रणुव्रत पुरस्कार वर्ष 2023 के लिए प्रसिद्ध उद्योगपति व समाज सेवी रतन टाटा को मुंबई स्थित उनके आवास पर भेंट किया गया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के अध्यक्ष अविनाश नाहर के साथ वहां पहुंचे प्रतिनिधि मण्डल ने रतन टाटा को पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिन्ह, प्रशस्त पत्र सहित 1.51 लाख की राशि भेंट की। इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा, मुंबई कस्टम कमिश्नर अशोक कुमार कोठारी, अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कुमारी व सहमंत्री मनोज सिंघवी उपस्थित थे। अणुविभा अध्यक्ष नाहर ने रतन टाटा को अणुव्रत पुरस्कार सौंपते हुए मानव जाति को उनके सकारात्मक योगदान की प्रशंसा की एवं दुनिया में मानवीयता का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए सम्पूर्ण अणुविभा परिवार की ओर से बधाई ज्ञापित की। उन्होंने बताया कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने रतन टाटा के



प्रति अपनी मंगल कामनाएं प्रेषित की हैं व उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना की है। रतन टाटा ने अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति अपना हार्दिक आदर व सम्मान व्यक्त किया। उल्लेखनीय है कि 75 वर्षों से गतिमान अणुव्रत आंदोलन मानवीय एकता, नैतिकता, अहिंसा व सद्भावना के क्षेत्र में विशद् कार्य कर रहा है। आचार्य तुलसी द्वारा प्रणीत यह आंदोलन संयुक्त राष्ट्र तक अपनी विशेष पहचान स्थापित कर चुका है। इस अवसर पर

अणुविभा प्रतिनिधि मण्डल ने रतन टाटा को अणुव्रत साहित्य, 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' पत्रिकाओं के विशेषांक भेंट किये एवं अणुव्रत की प्रवृत्तियों चुनावशुद्धि अभियान, अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स, एलिवेट, पर्यावरण जागरूकता अभियान, नशामुक्ति अभियान, जीवन विज्ञान आदि के बारे में जानकारी प्रदान की। टाटा ने मनाव समाज की भलाई के लिए अणुव्रत आंदोलन द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना की।

फिजिकल एंड स्पिरिचुअल हेल्थ पर कार्यशाला

कोयंबटूर।

अभातेममनिर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल कोयंबटूर ने कैसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत फिजिकल एंड स्पिरिचुअल हेल्थ विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम का

शुभारंभ मुनि दीपकुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत किया। मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि आज इस तनाव भरी जिंदगी में प्रेक्षा ध्यान और योग का बहुत महत्व। कार्यशाला के मुख्य वक्ता दिल्ली से समागत प्रेक्षाध्यान

योगा प्रशिक्षक विमल गुनेचा ने कहा कि हमारे शरीर की गतिविधियों के पीछे का कारण हमारी ऊर्जा होती है और यह ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए प्रेक्षाध्यान और योग मुख्य साधन है। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा एवं संचालन प्रियंका बेंगानी ने किया।

पैसठिया छंद अनुष्ठान का आयोजन

माधावरम, चेन्नई।

युवामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण की सुशिष्या डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में पैसठिया छंद का महाअनुष्ठान आचार्य महाश्रमण पब्लिक स्कूल में कार्यक्रम रखा गया। साध्वीश्री ने कहा वर्तमान में हर व्यक्ति क्लेश अशांति-असुरक्षा तथा राहु के दोष से संतप्त है इस पीड़ा से मुक्ति एवं सभी ग्रह दोषों की उपशांति के लिए यह पैसठिया छंद रामबाण औषधि है, इसमें चौबीस तीर्थकरों की स्तुति की गई है। सर्प जैसे बांसुरी के नाद से जागृत होता है जैसे ही इन चौबीस तीर्थकरों की आराधना करने से आत्मा मोह निद्रा से जागृत होती है। इस छंद के यंत्र में एक से लेकर पच्चीस तक अंक हैं

जिनमें तीर्थकर के चौबीस अंक हैं और पच्चीसवां अंक ईष्ट की स्थापना के रूप में स्थापित किया गया है।

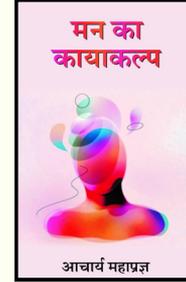
साध्वी मयंक प्रभा जी ने कहा यह छंद प्राचीन अनुभवी आचार्यों की सघन ध्यान साधना और गहन शास्त्रीय अध्ययन के द्वारा प्राप्त मानव जाति को अमूल्य भेंट है। इसकी आराधना से हित, शिव और मंगल तो होता ही है तथा विघ्न बाधाओं से उपशांति भी होती है। साध्वी दक्षप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की शुरुआत स्थानीय महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई। प्रवीण सुराणा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साध्वी मेरुप्रभाजी ने मंच संचालन किया। आभार ज्ञापन सुरेश रांका ने किया।

फिट युवा हिट युवा के तहत योगा एवं मैडिटेशन

पुणे। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद पुणे द्वारा योगा एवं मैडिटेशन सेशन तेरापंथ भवन, पुणे में आयोजित किया गया। सेशन के दौरान ध्यान का प्रयोग डॉ. मुनि आलोक कुमारजी द्वारा करवाया गया। योगा ट्रेनर के रूप में आदित्य लोहा ने सेवाएं दी। इस अवसर पर नियमित रूप से तेरापंथ भवन, पुणे में योग कक्षा आयोजित करने का निर्णय किया गया। इस कार्यक्रम में सुमित कोठारी, दिलीप चोपड़ा ने संयोजक के रूप में अपनी सेवाएं दी। इस अवसर पर पुणे परिषद् अध्यक्ष अक्षय चपलोत, मंत्री मनीष भंडारी, हर्षद सुराणा, अनुराग सुराणा आदि उपस्थित थे।

बोलती किताब

मन का कायाकल्प



प्रतिक्रिया से दूरी रहें - सारी दुनिया प्रतिक्रिया का जीवन जी रही है। क्या प्रतिक्रिया का जीवन जीने वाला व्यक्ति स्वतंत्र हो सकता है? स्वतंत्रता का समर्थन कर सकता है? या स्वतंत्रता का दावा कर सकता है? जो जितना करता है, उतना ही झूठ है। हमारे यहां अध्यात्म की गाथा गाई गई। उसे इसलिए महत्व दिया गया कि आध्यात्मिक कुछ समझने वाला व्यक्ति प्रतिक्रिया का जीवन नहीं जीता।

राग द्वेष से मुक्त की शृंखला - सामान्य विशेष और विशेष सामान्य। यह शृंखला बहुत बड़ी है। सैकड़ों-सैकड़ों चिंतन के बाद हम निर्णय की भूमिका तक पहुंचते हैं, जहां पहुंचने पर रागात्मक प्रवृत्तियां उपशांत हो जाती हैं और विरागात्मक प्रवृत्तियां जन्म ले लेती हैं।

ध्यान सर्वश्रेष्ठ की प्रक्रिया - जब व्यक्ति की प्रवृत्तियों में परिवर्तन घटित होने लगता है, उसकी नींद बदलती है, कषाय कम होते हैं, अहंकार मिटता है, माया और कपट नहीं रहता, भय और मैथुन संज्ञा कम हो जाती है तब समझना चाहिए कि ध्यान फल ला रहा है। यदि सारे परिवर्तन घटित नहीं होते तब समझना चाहिए कि ध्यान नहीं, ध्यान के नाम पर कुछ और हो रहा है।

सफल जप की प्रक्रिया - जप स्वतंत्र पद्धति से भी किया जा सकता है और चैतन्य केन्द्रों पर भी किया जा सकता है। चैतन्य केन्द्रों पर किया जाने वाला जप बहुत सरल होता है दर्शनकेन्द्र और ज्योतिकेन्द्र ये दोनों चैतन्यकेन्द्र वृत्तियों का नियंत्रण करते हैं और अंतर्दर्शन को जागृत करते हैं। इन केन्द्रों पर ही और श्री का जप किया जाए तो बहुत लाभप्रद होता है।

समस्या का समाधान गुरु द्वारा - प्रत्येक साधना की जानकारी गुरु से लेनी चाहिए। जो-जो समस्याएं आती हैं, उनका निराकरण कर आगे बढ़ा जा सकता है, यही विकास का मार्ग है। यदि साधक के मन में यह भावना आ जाए कि मैं अपनी कमजोरी गुरु के समक्ष कैसे प्रकट करूं, वह साधक विकास नहीं कर पाता।

मैत्री की भावना जगो - 'दूसरे का अनिष्ट करने में स्वयं का अनिष्ट है' जो इस सूत्र को पकड़ लेता है, वह कभी दूसरे का अनिष्ट नहीं कर सकता। 'मैं दूसरे का अनिष्ट कर रहा हूँ' यह सोचना मूर्च्छा है। वह नहीं जानता कि पर्दे के पीछे क्या हो रहा है? जिसके मन में मैत्री की भावना का जागरण होता है, वह कभी किसी का अहित नहीं कर सकता।



पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :

आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

+91 87420 04849 / 04949 <https://books.jvbharati.org> books@jvbharati.org

परिवार में प्रिय बनने के लिए आत्मीयता जरूरी

चिकमंगलुरु।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में जीता है। समाज की एक छोटी एकाई है- परिवार। हमारी पारिवारिक जीवन शैली में विचार भेद, रुचिगत संस्कार भेद, रहन-सहन भेद आदि का उपक्रम नैसर्गिक है। ऐसी स्थिति में एक दूसरे के भाव एवं जीवन क्रम को समझना परिवार के लिए आदर्श बन सकता है। ये विचार मुनि मोहजीतकुमार जी ने विशेष प्रवचन माला में 'परिवार में प्रिय कैसे बनें' विषय पर प्रकट किए। मुनिश्री ने परिवार की परिभाषा करते हुए कहा कि परिवार में प्रिय बनना है तो सद् व्यवहार, अपनेपन

का विकास, सहानुभूति, सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना होगा। वाणी में प्रियता, सरसता, मुदुता का प्रयोग करने से परिवार में प्रिय बन सकते हैं। प्रिय बनने के लिए आत्मीयता और सब कार्यों में सहज सहभागिता जरूरी है। साथ-साथ जन्म नहीं ले सकते, साथ-साथ मर नहीं सकते, साथ-साथ जी तो सकते हैं। परिवार के प्रत्येक सदस्य में सहयोग, शिष्टाचार और प्रशंसा का मनोभाव विकसित हो। मुनि जयेशकुमार जी ने कहा- प्रियता का सबसे बड़ा आधार है आश्वास और एक दूसरे के प्रति विश्वास। इन दो तथ्यों से परिवार में प्रियता का विकास किया जा सकता है।

संयम और तप से आत्मा को करें भावित : आचार्यश्री महाश्रमण

सिद्धी प्रदाता ने कन्याओं को श्री, ही, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी के विकास का दिया शुभाशीष

सूरत।

28 अगस्त, 2024

जिनशासन प्रभावक आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जो परिग्रही होता है, परिग्रह में अनुरक्त रहता है, इस मोह-माया की दुनिया में रमण करने वाला होता है और बाह्य आकर्षणों से आक्रांत रहता है, इन्द्रिय विषयों के सेवन में रचा-पचा रहता है, ऐसा जो प्रमादी-परिग्रहग्राही व्यक्ति होता है, उसे मानो पता भी नहीं है कि उसे कभी आगे भी जाना है। वह अमर की तरह व्यवहार करता है।

जहां परिग्रह का शासन है और चेतना आसक्ति में निमग्न है, ऐसे व्यक्ति के जीवन में न तप दिखाई देता है, न दम और न नियम। तीन महत्वपूर्ण शब्द हैं- तप, दम और नियम। स्वाद विजय की और आसन विजय की साधना तपस्या है। विशेष साधक आसन विजय, निद्रा विजय और क्षुधा विजय करने वाले होते हैं। प्राणी को अपने जीवन और देह को चलाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है। शरीर से काम लेना है तो शरीर को भोजन के रूप में भाड़ा देना होता है। संथारे में विदेह की साधना होती है।



साधु आहार करते हुए भी स्वाद विजय का प्रयास करते हैं। स्वाद और विवाद में फालतू रस नहीं लेना चाहिए। नींद, भोजन और चलने में संतुलन होना चाहिए। विवेक महत्वपूर्ण है।

इन्द्रिय विजय की साधना दम है। कषायों को जीतना भी दम है। भोगोपभोग - वस्तुओं का एक समय तक त्याग कर देना नियम है। अनेक प्रकार के छोटे-छोटे त्याग नियम बन जाते हैं। जहां परिग्रह-आसक्ति होती है, वहां तप, दम और नियम का होना कठिन हो सकता है। लोभ साधना में

अवरोध पैदा करता है।

सामान्य परिग्रही व्यक्ति को तप, दया और नियम में प्रयास करना चाहिए। चतुर्मास में तप करने का अधिक प्रयास कर आत्मा को भावित करने का लक्ष्य रखना चाहिए। संयम और तप से हम आत्मा को भावित करते रहें। भगवान महावीर के साधना काल में संयम-तप विशेष था। आचार्य भिक्षु ने भी अत्यधिक सहन किया था। भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु में कई बातों की समानताएं हैं।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री

गजसुकुमाल मुनि के मोक्ष में जाने व उनके वियोग आदि प्रसंगों को आख्यान रूप में प्रदान किया। तदुपरान्त आचार्यश्री ने आख्यान के इस क्रम को सम्पन्न करने की घोषणा भी की। अनेकानेक तपस्वियों ने अपनी-अपनी तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

पूज्यवर की पावन सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में द्विदिवसीय 20वें राष्ट्रीय कन्या मंडल अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। पूज्यवर ने अपने पावन आशीर्वचन में कहा कि अधिवेशन

का नाम 'ज्योतिर्मय' रखा गया है। ज्योतिर्मय बनने के लिए हमें छः देवियों - श्री, ही, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी रूपी विशेषणों का विकास होता रहे। इन छह देवी रूपों कन्याएं अच्छा विकास करें। कन्याएं अच्छी श्राविकाएं बनें और अच्छे धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य करती रहें और स्वयं के विकास का प्रयास करती रहें।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि हमारी ये कन्याएं पूज्यवर से आशीर्वाद लेने के लिए उपस्थित हुई हैं। हर व्यक्ति आलोक चाहता है। हमें भीतरी प्रकाश को भी प्राप्त करना चाहिए। आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी और शासनमाता ने महिलाओं और कन्याओं के विकास के लिए बहुत कार्य किया है। ज्योतिर्मय बनने के लिए श्रद्धा को पुष्ट रखना होगा, ज्ञानार्जन करना होगा और संस्कार सम्पन्न बनना होगा। मंचीय कार्यक्रम में अभातेममं की अध्यक्ष सरिता डागा ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ कन्या मण्डल की प्रभारी श्रीमती अदिति सेखानी ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तेरापंथ कन्या मण्डल, सूरत ने अपनी प्रस्तुति दी। कन्याओं ने चौबीसी के गीत का संगान किया।

प्रमाद के कारण अनेक योनियों में जाती है आत्मा : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

27 अगस्त, 2024

महावीर समवसरण में महावीर के प्रतिनिधि आचार्य श्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आचार्य आगम में कहा गया है - प्राणी अनेक योनियों में जाता है। कभी किसी योनि में, कभी किसी दूसरी योनि में, और नाना प्रकार के आघातों का अनुभव करता है। वह कष्ट भी भोगता है। इसका क्या कारण है?

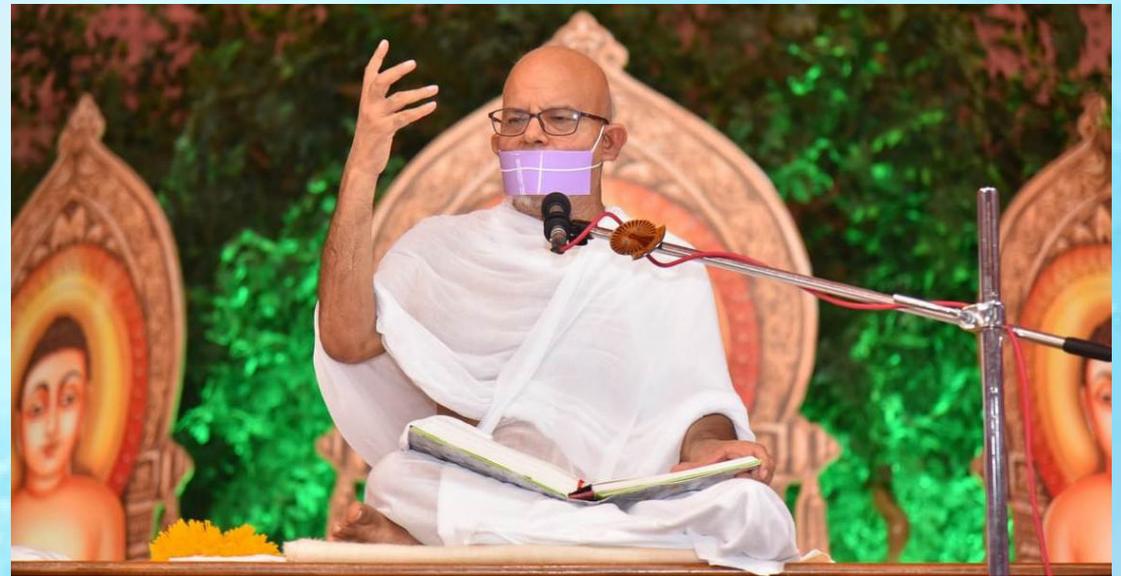
इसका कारण यह है कि अपने प्रमाद से जीव अनेक रूपों वाली योनियों में जाता है और आघातों का अनुभव करता है। सुख-दुःख का कर्ता स्वयं आत्मा है। दूसरे निमित्त बन सकते हैं, पर खुद के किए कर्म ही कष्ट प्रदान करने वाले होते हैं। जीव प्रमाद करता है, पाप का आचरण करता है, ऐसे कर्म का बंध कर लेता है कि फिर उसे भोगना

पड़ता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि मेरे सुख-दुःख के जिम्मेदार दूसरे नहीं हैं, मैं ही हूँ।

पूज्य जयाचार्य ने भी 'आराधना की ढाल' में बताया है - किए गए कर्म ही सुख-दुःख का कारण होते हैं। व्यक्ति अप्रमाद में रहे, अशुभ योगों में जाने से बचने का प्रयास करे। योगों का अलग-अलग व्यापार होता है। यदि साधु अप्रमाद में है, और उससे अनजाने में किसी जीव की हिंसा हो जाती है, तो उसे पाप नहीं लगता। सामान्य नियम अलग हैं और विशेष नियम अलग हैं। अपवाद की स्थिति में साधु सामान्य नियम से हटकर कार्य करते हैं, तो उन्हें दोष नहीं लगता।

ऊपरले आख्यान में पूज्यवर ने मुनि गजसुकुमाल के आख्यान के माध्यम से उनके मोक्षगामी होने की बात फरमाई।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'चतुर्विंशति स्तव'



भक्ति का एक अद्भुत स्वरूप है। भक्ति दो प्रकार की होती है - सकाम भक्ति और निष्काम भक्ति। 'चतुर्विंशति स्तव' में मांग की गई है, पर वह हमें निष्काम भक्ति की ओर ले जाने वाली है। इसके साथ आत्म-शुद्धि और आत्म-विकास

का भाव जुड़ा हुआ है। इसमें उच्च कोटि की मुक्ति की कामना की गई है। मुनि निकुंज कुमार जी ने अपनी जन्मभूमि पर परमपावन का स्वागत करते हुए अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रभा जैन, विनोद मरोठी आदि ने

पूज्यवर के समक्ष 'रश्मियां रश्मिरथ की, गाथा महाश्रमण की' विशेषांक को लोकार्पित किया। इस संदर्भ में प्रभा जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

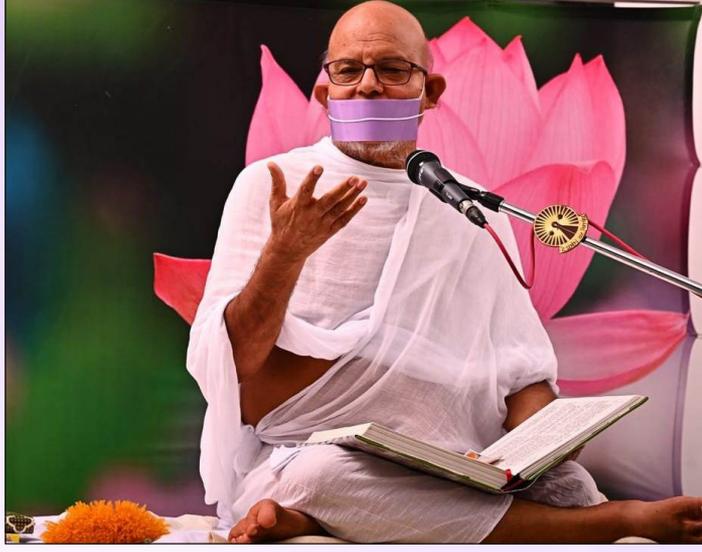
सुख-दुःख की परिस्थितियों में रखें समता भाव : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।

26 अगस्त, 2024

भाद्रव कृष्णा अष्टमी, जो जन्माष्टमी के रूप में विख्यात है, आज के दिन देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। श्रीकृष्ण, मुनि गजसुकुमाल के बड़े भाई और भगवान अरिष्टनेमि के चचेरे भाई थे। निर्ग्रन्थ वाणी के अनुसार, श्रीकृष्ण की आत्मा आने वाले उत्सर्पिणी काल में तीर्थंकर रूप में अवतरित होगी और मोक्ष का वरण करेगी।

जन-जन की आस्था के राम, हर मन को मोहने वाले आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आगम वाणी की अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि आचार्यो में समता की साधना का, समता धर्म के आचरण का संदेश दिया गया है। जीवन में कभी हम हर्ष से भर जाते हैं, तो कभी आक्रोश या गुस्से में आ जाते हैं। जब अनुकूल परिस्थिति आती है, तो व्यक्ति खुशी से झूम उठता है। प्रतिकूलता में व्यक्ति दुखी हो जाता है, आक्रोशित हो जाता है, और मन में कष्ट अनुभव करने लगता है। यह जीव अनेक बार उच्च गोत्र वाला हो गया, और अनेक बार नीच गोत्र वाला भी हो गया। तो फिर खुशी किस बात की मनानी और गुस्सा किस बात का? कोई हीन नहीं है और कोई अतिरिक्त भी नहीं। व्यवहार जगत में उच्चता और हीनता होती है, परंतु यह सिर्फ इस जीवन के संदर्भ में है। हमें आत्मा पर ध्यान देना चाहिए। आज जो पोता है, वह कभी दादा भी रहा होगा। आज जो संपन्न है, वह कभी



गरीब भी रहा होगा। इस प्रकार, पद ऊंचा-नीचा रहा होगा।

अनंत सिद्धों की आत्मा समान है। कोई हीन नहीं है और कोई अतिरिक्त भी नहीं। सभी आत्माओं में अनंत ज्ञान और अनंत दर्शन है। समझदार व्यक्ति को उच्च गोत्र मिलने पर, सम्मान मिलने पर हर्ष में नहीं जाना चाहिए, और अगर नीच गोत्र की स्थिति मिल जाए या अपमान मिल जाए, तो आक्रोश में नहीं आना चाहिए। समता में रहो, समता ही धर्म है। इसमया धम्म मुदाहरे मुणि इ हमारे जीवन में सुख-दुःख की परिस्थितियां आ सकती हैं, पर भौतिकता मिलने पर अधिक खुशी नहीं मनानी चाहिए। यही समता की साधना है।

भगवान ऋषभदेव के वर्षीतप की तपस्या हुई, आहार नहीं मिला, पर समता बनी रही। बाद में ईक्षुरस से पारणा हुआ था। ज्ञानी व्यक्ति न तो हर्ष

करता है और न ही गुस्सा करता है। साधु पंडित होता है। गृहस्थ भी समता धारण करे। साधु तो समता की मूर्ति होते हैं। चरित्रवान व्यक्ति ही पंडित कहलाता है। जो राग-द्वेष में रहता है, वह विषयासक्त होता है।

मुख्य प्रवचन के पश्चात पूज्यवर ने मुनि गजसुकुमाल के आख्यान क्रम को आगे बढ़ाया।

पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया - आज भाद्रव कृष्णा अष्टमी है। मैंने आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की आज्ञा से भगवद् गीता और आगम पर तुलनात्मक भाषण दिए थे। भगवद् गीता के 18 अध्यायों में श्री कृष्ण व अर्जुन का संवाद है। हम ग्रंथों से अच्छी बातें अपनाकर आगे बढ़ते रहें। तेरापंथ किशोर मंडल सूरत ने चौबीसी और कन्या मंडल ने 18 पाप की ढाल की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल ने संकल्प ग्रहण किए।

अहम् 'शासनश्री' साध्वी रतनश्रीजी का देवलोकगमन



जीवन परिचय

- जन्म :** वि. सं. 1991 भाद्रपद शुक्ल पंचमी, (संवत्सरी महापर्व)
पिता : हुलासमल चौरडिया
माता : विद्या देवी चौरडिया
जन्म स्थान : श्रीडूंगरगढ़
वैराग्य प्रेरणा : ज्येष्ठ भ्राता के विवाह के एक दिन पहले अनुज भ्राता की मृत्यु का दारुण दृश्य।
दीक्षा : वि. सं. 2008, आचार्य श्री तुलसी के मुख कमल से, दिल्ली में
अग्रगण्य : वि. सं. 2029, मर्यादा महोत्सव, मोमासर
अध्ययन : हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती भाषाओं का ज्ञान
कंठस्थ : दशवैकालिक, उत्तराध्ययन-21 अध्ययन, शांत सुधारस, भक्तामर, कल्याण मंदिर, मनोनुशासनम्, कर्तव्यषट् त्रिशिका, शिक्षावर्णवती, जैन सिद्धांत दीपिका, भिक्षु न्याय कर्णिका, कालू कौमुदी, नाम माला (तीसरे खंड के 300 श्लोक तक), तुलसी मंजरी, चौबीसी, श्रावक संबोध, व्यवहार बोध, आचार बोध, संस्कार बोध, थोकडे, 25 बोल, तेरह द्वार, तत्व चर्चा, लघु दंडक, बावन बोल, शील की नवबाड़, बावीस परिषद, व्याख्यान- अग्नि परीक्षा, हरिश्चंद्र।
यात्रा : बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि प्रांत एवं नेपाल।
'शासनश्री' अलंकरण : शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा श्रीगंगागर में, फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा, वि. सं. 2070
जाती साधु साध्वियां : बहिनै- 'शासनश्री' साध्वी सुव्रताजी, 'शासनश्री' साध्वी जयप्रभाजी (स्वर्गीय), 'शासनश्री' साध्वी कुलबालाजी (स्वर्गीय), 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभाजी (भतीजी), साध्वी गुणसुंदरी जी (स्वर्गीय) (भाभी)
 भांजी : साध्वी स्वर्णरेखाजी, साध्वी स्वस्तिकाश्रीजी, साध्वी सुधांशुप्रभाजी
 दौहित्र : मुनि जयदीपकुमार जी
चाकरी : 3 तीन सेवा केंद्र लाडनूं, श्री डूंगरगढ़, राजलदेसर
संथारा प्रत्याख्यान : 9 अगस्त 2024, प्रातः 10.21 बजे तिविहार संथारा
 26 अगस्त 2024, सायं 7.40 बजे चौविहार संथारा
देवलोकगमन : 27 अगस्त 2024, प्रातः 9.21 बजे, दिल्ली

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

